कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल का विद्यार्थियों की जागरूकता व सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन

दयालबाग एजूकेशनल इंस्टिट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)

पीएच.डी (शिक्षा) की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध की

रूपरेखा

शोध निर्देशिका
डॉ. मीनू सिंह

शोधार्थिन
पिंकी कुमारी

पेडगोजिकल साइंस, शिक्षा संकाय

दयालबाग एजूकेशनल इंस्टिट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)

दयालबाग, आगरा–282005

2021

1. **प्रस्तावना**

NCF 2005 के अनुसारए शिक्षा व्यवस्था उस समाज से अलग होकर कार्य नहीं करती जिसका वह एक भाग है। जातिगत, आर्थिक तथा स्त्री-पुरुष संबधों का पदानुक्रम, सांस्कृतिक विविधता और असमान विकास से, जो भारतीय समाज की विशेषताएं है, शिक्षा की प्राप्ति और स्कूलों में बच्चों की सहभागिता से प्रभावित होती है। असमान लैंगिक संबधं न केवल वर्चस्व को बढ़ावा देते है बल्कि वे लड़के-लड़कियों में तनाव भी पैदा करते है तथा मानवीय क्षमताओ के पूर्ण विकास की स्वतंत्रता में बाधा पहुँचाते है यह सब के हित में है कि मनुष्य को लिंग असमानता से मुक्त कराया जाए।

शिक्षा समाज की मौजूदा महत्वकांक्षाओ व जरूरतों के साथ शाश्वत मूल्यों तथा समाज के तात्कालिक सरोकारों सहित वृहद मानवीय आदर्शों को भी प्रतिबिम्ब करती है तथा मार्गदर्शन सिद्धांत सामाजिक मूल्यों को परिप्रेक्ष्य प्रदान करती है शिक्षा का मूल उद्देश्य लोकतंत्र, समानता, न्याय, स्वतंत्रता, परोपकार, धर्मनिरपेक्षता, मानवीय गरिमा व अधिकार के प्रति जागरूकता एवं आत्मनिर्भरता बनाना है। शिक्षा के द्वारा लैंगिक (जेंडर) असमानता को दूर करना एक महत्वपूर्ण प्रयास है। लैंगिक समानता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में शिक्षा,शिक्षण कार्य, विद्यालय, पाठ्यपुस्तक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

समाज में लैंगिक समानता की स्थिति वह मानक बन गई है जिसमें मानवता की प्रगति और नागरिक शक्ति को मापा जा सकता है। भारत देश आर्थिक-राजनीतिक प्रगति की ओर अग्रसर है, परन्तु लैंगिक (जेंडर) असमानता के कारण अवरोध की स्थिति बनी हुई है।“लैंगिक असमानता का सामान्य अर्थ विभिन्न सामाजिकए आर्थिकए सांस्कृतिक एवं समानता के सभी पक्षां में पुरूष तथा महिलाओ के बीच समानता न होने से हैं।“

- लैंगिक (जेंडर) समानता- लैंगिक समानता का अभिप्राय स्त्री तथा पुरुष के मानसिक विचारों, संवैधानिक अधिकारों, वैधानिक सामाजिक भूमिकाओं, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक तथा अवसरों की समानता से है।

भारतीय संविधान में प्रत्येक नागरिक को समानता का अधिकार प्राप्त है। लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता बढ़ा कर व्यवहार में बदलाव लाने का प्रयास करना तथा विचारों में परिवर्तन व समझ को विकसित करना है। लैंगिक समानता को सकारात्मक रूप से समझने की तथा लैंगिक धारणाओ को स्पष्ट करने की आवश्यकता है जिसके द्वारा लिंग के आधार पर होने वाले भेदभाव को पूर्णरूप से समाप्त किया जा सके-

- वर्तमान समय में आवश्यक है कि महिला को जननी तथा मातृत्व भूमिकाओं से आगे बढकर समझा जाए, उनकी उपलब्धियों, क्षमताओं तथा अवसरां की उपलब्धता को समानता के रूप में आगे लाया जाए।
- महिलाओं तथा बालिकाओं के प्रति सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक अवसरां के क्षेत्र में होने वाले भेदभाव को स्वीकार किया जाये व सकारात्मक उपायों पर विवेचन आवश्यक है।
- परिवार, विद्यालयों, तथा अन्य कार्य क्षेत्रों में स्त्री-पुरूष का संतुलन बनाने की आवश्यकता है। किसी विशेष कार्य के प्रति लिंग का निधारण करना उचित नहीं है तथा समानता के लिए आवश्यक हैए स्त्री तथा पुरूष दोनों के विचारों में संतुलन की स्थिति हो।
- अधिक समेकित तथा बेहतर समन्वित वैश्विक कार्यवाही के द्वारा लिंग समानता को प्रोत्साहन देना चाहिए।
- लैंगिक असमानता तथा भेदभाव को समाप्त करने के लिए आई0एल0ओ0 (International labour orgaization) श्रम कार्यक्रमो को मुख्य धारा लाना आवश्यक है।
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लैंगिक समानता हेतु आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में अवसर बढाने के लिए प्रयत्न किये जायें।
- लैंगिक समानता हेतु जागरूकता पुरुष और महिला दोनों के प्रति लिंग के आधार पर भेद भाव तथा रोजगारए सामाजिकए आर्थिकए शैक्षिकए राजनैतिकए पारिवारिक स्तर पर समानता हेतु आत्मविश्वास में वृद्धि करना तथा आत्मनिर्भर बनाना है पुरूषों तथा महिलाओं की उन्नति, विकास तथा उन्हें जागरूक

होने को मूर्त रूप देना लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता है। लैंगिक समानता हेतु जागरूकता की नीतियों का व्यापक प्रसार किया जाए ताकि लक्ष्यों की प्राप्ति तथा सक्रिय भागीदारी के लिए उन्हें प्रेरित किया जा सके

- महिलाओं के पूर्ण विकास हेतु सकारात्मक आर्थिक तथा सामाजिक नीतियों के द्वारा एक वातावरण का निर्माण करना जिसके द्वारा वह अपनी क्षमताओं को समझ सके।
- सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा नागरिक क्षेत्रों में महिलाऐं मानवाधिकारों का मौलिक एवं स्वतंत्रता रूप से पुरूषों के समान कानूनी तथा व्यवाहारिक रूप में उपयोग कर सके।
- सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी व निर्णय लेने के समान अवसर प्राप्त हो सके।
- सभी स्तरों पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य तथा व्यवसायिक मार्गदर्शन, रोजगार, समान वेतन, सामाजिक सुरक्षा व सुविधाऐं, सरकारी-गैर सरकारी ऑफिस इत्यादि में समान अवसर उपलब्ध हो।
- महिलाओं के प्रति होने वाले सभी प्रकार के भेदभाव, शोषण, उत्पीड़न, अपराध व उन्मूलन के लिये कानून प्रणाली को मजबूत बनना होगा।
- लैंगिक अवधारणा तथा भेदभाव को समाप्त करने के प्रति स्त्री तथा पुरूष दोनों की सक्रिय भागीदारी, सामाजिक विचारधाराओं, अवधारणाओं व सामुदायिक व्यवहारों में परिवर्तन लाना आवश्यक है।
- राष्ट्र के विकास की प्रक्रिया में सकारात्मक लैंगिक दृष्टिकोण लागू करना आवश्यक है।
- महिलाआ तथा बालिकाआ के प्रति होने वाले भेदभावों का उन्मूलन तथा सिविल सोसाइटी में महिला संगठनों की भागीदारी तथा उन्हें सशक्त बनाने का प्रयास करना आवश्यक है।

भारत में लैंगिक असमानता के संदर्भ में अमत्ये सेन (2017-2018) आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसारए लैंगिक समानता संकेतों में सुधार के साथ यह भी प्रदर्शित करता है कि भारत में कम होते लिंग अनुपात ने लैंगिक असमानता को जन्म दिया है। देश में 63 मिलियन महिलाएं लापता है तथा 21

मिलियन लड़कियां अवांछनीय है यह चिंता जनक स्थिति है जो लैंगिक असमानता के मुद्दे पर भारत को इंगित करता हैं।

लैंगिक समानता हेतु जागरूकता के घटक -

- लैंगिक समानता के अपना महत्व समझने की भावना।
- विकल्पां निर्माण और निर्धारण करने का अधिकार।
- अवसरो तथा संसाधनो का निर्माण।
- राष्ट्रीय और अन्र्तराष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक समान न्याय व्यवस्था के लिये सामाजिक बलदाव की दशा को प्रभावित करने की योग्यता ।
- आत्मविश्वास तथा सकारात्मक सोच का निर्माण करना।
- शिक्षण और कौशल विकास योजनओं का क्रियान्वयन करना।

भारतीय संविधान प्रत्येक भारतीय को समानता प्रदान करता है तथा समाज मे व्याप्त भेदभाव, अपमान, उत्पीड़न के प्रति सकारात्मक उपाय करने की शक्ति प्रदान करता है। संविधान की उद्देशिका मे,“हम भारत के लोग भारत को एक प्रभुत्व संपन्न लोकतांन्त्रिक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को न्याय, स्वतंत्रता और समानता दिलाने और उन सब में बंधुता बढाने के लिए दृढ संकल्प करते हैं।“

लैंगिक समानता का सिद्धांत भारतीय संविधान में निहित मौलिक कर्तव्यों और निति निदेशक सिद्धांतो में प्रतिपादित है।"भारतीय संविधान में समानता का अर्थ प्रतिष्ठा तथा अवसर की समानता है।"भारतीय संविधान में महिलओं के उत्थानऔर लैंगिक समानता के वैधानिक उपबंधों का गठन किया है, अनुच्छेद (14) समानता का अधिकार जिससे विधि के समक्ष समानता, अनुच्छेद (15) किसी भी नागरिक के साथ केवल धर्म, जाति, मूलवंश, लिंग, जन्मस्थान के आधार पर विभेद नहीं किया जायेगा। अनुच्छेद 15(3) स्त्रियो तथा बच्चों के लिए विशेष प्रावधान का अधिकार दिया गया है। अनुच्छेद 16(1) सरकारी सेवाओं

में अवसर की समानता, अनुच्छेद (21) जीवन की रक्षा तथा व्यक्तिगत स्वतन्त्रा, अनुच्छेद 21(क) नई शिक्षा निति 2020 के तहत 3 साल से 18 साल के बच्चों को शिक्षा का क़ानूनी अधिकार, अनुच्छेद 39 (क,घ) पुरषों और महिलओं को जीविका के पर्याप्त साधन एवं सांस्कृतिक अवसर सुनिशित करने का प्रयास, अनुच्छेद(51) इसके अर्न्तगत उन सभी बातों का परित्याग करना जो नारी सम्मान के विरूद्ध है। भारत सरकार द्वारा लैंगिक समानता जागरूकता हेतु बहुत- सी महत्वपूर्ण योजना का क्रियान्वयन किया जिसमें किशोरी शक्ति योजना (2000), महिला-समख्या कार्यक्रम (1989), स्वाधार (2001), स्वयं योजना(2008), इन्द्रिरा गाँधी राष्ट्रीय निशक्तता योजना (2007), महिला हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम (2005), उड़ान (2014), प्रगति (2014), मातृत्व लाभ योजना (2016), कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन शोषण एक्ट (2013), बाल यौन अपराध संरक्षण अधिनियम (2012), महिलाओं के रोजगार कार्यक्रम NSTEP (2015), बेटी पढाओ-बेटी बचाओ (2015) आदि योजनाऐं चलायी गई हैं परन्तु फिर भी वर्तमान समय में लैंगिक असमानता को बड़े पैमाने पर आका गया ।

NCF 2005 के अनुसार "लैंगिक समानता के लिए हमें पाठ्य.पुस्तकों का प्राथमिक उपकरणों की तरह उपयोग करना चाहिए, क्योंकि यह शिक्षा हेतु बहुत बडी संख्या में विद्यालय जाने वाले विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए पर्याप्त साधन हैं।"

NCERT के अनुसार, "नई पाठ्यपुस्तकें लिखते और तैयार करते समय इस बात का ध्यान में रखना होगा कि बच्चों को कम उम्र सही जेंडर सवेंदनशील बनाना है तथा उन्हे जेंडर पक्षपात से दूर रखना है। इसके पीछे सम्पूर्ण भावना है कि विद्यार्थी यह महसूस कर सके कि महिलाएं पुरूषों से कम योग्य या असमर्थ हैं इस सोच का कोई आधार नहीं है वर्तमान संदर्भ में उठने वाले मुद्दों के आधार पर कहा जा सकता है कि NCF (2005) में प्रस्तावित सुधार स्वागत योग्य है, लेकिन अभी भी पाठ्य.पुस्तकों व पाठ्यक्रमों से जेंडर पक्षपात को कम करने की आवश्यकता है।"

NCF 2005 में पाठ्य-पुस्तकों में सुधार प्रस्तावित किये हैं-

पाठ्यक्रमों व पाठ्यपुस्तकों से जेंडर पक्षपात को कम करने के लिये निम्नलिखित सुझाव हैः

- शैक्षिक सामग्री का उत्पादन संविधान में निहित भावना तथा मौलिक अधिकार एवं समानता के अनुरूप होना चाहिए।
- पाठ्यक्रम व पाठ्य.पुस्तकों में वहां संशोधन करने की आवश्यकता है जहाँ महिलाओं को चित्रण केवल अच्छी गृहणियों की तरह किया गया है। पुरूषों के समान महिलाओं की उपलब्धि को शामिल करने की आवश्यकता है।
- पाठ्यक्रम एवं पाठ्य.पुस्तकें एक लिंगीय समिति जिसमें अकादमिक, नारीवाद, इतिहासकार, सरकार आदि शामिल हो, जिससे पाठ्यक्रम की गुणवत्ता एवं यह सुनिश्चित हो जाये कि पाठ्यपुस्तकें लिंग भेद से मुक्त है।
- बालिकाओं के स्थान के बारे में सतही सोच लिखने के बजाए लेखकों को परिवार में बालिकाओं की वास्तविक स्थिति को महसूस करके लिखना चाहिए।
- आज बहुत कम महिलाओं की आत्मकथा पढ़ाई जाती है, क्योंकि महिलाओं की आत्मकथाएं कम संख्या में निर्मित हैं इनकी संख्या बढ़ा कर बालिकाओं को प्रेरित किया जा सकता है।
- लिंग भेद को दर्शाने वाली शिक्षण सामाग्री को परिवर्तित कर देना चाहिए।
- शिक्षक को कक्षा में हमेशा जेंडर तटस्थ शब्द का प्रयोग करना चाहिएए अपने स्वयं के विचारों में परिवर्तन करे।
- अपने समुदायों में लिंग पक्षपात और महिलाओं के प्रति हिंसा पर बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- पुरूष और महिला दोनों परिवार के फैसलों में बराबर भूमिका निभाएं।
- पुरूष और महिला दोनों सामुदायिक फैसलों में भी शामिल हो।

- एक सकारात्मक वातावरण तैयार करना और समुदाय के प्रभावशाली लोगों को इस अभिप्राय में शामिल करना।
- लोगों के मन में यह सोच विकसित करना कि महिला पुरूष की जीवनसाथी के रूप मेंए निजी एवं सार्वजनिक जीवन में एक समान है।
- लैंगिक असमानता समाप्त करने या कम करने के लिए छोटी-छोटी कोशिशों द्वारा एक बदलाव लाने का प्रयास कर सकते हैं।
- लड़के और लड़कियों, महिलाओं एवं पुरूषों को समान पोषणए स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा, रोजी.रोटी, कमाने एवं विकास के समान अवसर मिलें।
- कानूनी समानता के लिए राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयत्न किये जायें।
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पुरूषों एवं महिलाओं के लिए आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में अवसर बढ़ाने के लिए प्रयत्न किये जाये।

NCERT पोजीसन पेपर (2006) के अनुसार, "स्कूल में नामांकित प्रत्येक 10 लडकियों में से 9 लडकियों ने शिक्षा पूरी नहीं की कक्षा 1 में दाखिला लेने वाली 100 लडकियों ने बारहवीं कक्षा में ड्रापआउट किया। अतः पाठ्यक्रम सामग्री का निर्माण लैंगिक समानता के परिप्रेक्षय में होना चाहिए तथा उसे प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।"

राष्ट्र विकास क्रम में लैंगिक समानता महत्वपूर्ण भूमिका रखता है इस भूमिका को निर्वहन करना शिक्षा तथा शिक्षण कार्य के द्वारा सम्भव है। प्रत्येक नागरिक को समान शिक्षा का अधिकार प्राप्त हैए शिक्षा मानसिक रूप से सशक्त तथा विचारों में शुद्धता व नवीन विचारों को उत्पन्न करती है। जिसके द्वारा असमानता का भाव दूर किया जा सकता है व देश को प्रगति के मार्ग पर प्रशप्त किया जा सकता है।

यूनेस्को ग्लोबल पोस्ट 2015, के एजुकेशन एजेंडा में लैंगिक समानता को मुख्य स्थान दिया गया। "लैंगिक असमानता समाज और उसके विकास को प्रभावित करती है। स्त्री शिक्षक की भूमिका एवं प्रशिक्षण लैंगिक समानता के लिए महत्वपूर्ण है।"

लैंगिक समानता की अवधारणा समाज में व्याप्त स्त्री-पुरूष के बीच मौजूद असमानता को दूर करने की रणनीति है इसी संदर्भ में **NCERT पोजीशन पेपर नेशनल फोकस ग्रुप ऑन जेंडर इश्यूज के बिन्दू 2.6 के टीचर्स एज एजेंट ऑफ चेंज**, में "शिक्षक के लिए **PRONOUN 'HER'** का प्रयोग किया गया है **'HIS'** का नहीं, इससे पता चलता है कि महिला शिक्षक की शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिक असमानता को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका है।"

विश्व विद्यालय अनुदान आयोग **UGC (2015),** ने लैंगिक समानता के लिए जेंडर चैम्पियन क्लब का गठन किया गया जिसमें चुने गये विद्यार्थियों को सकारात्मक एवं प्रेरणात्मक कार्यक्रम चलाने की ट्रेनिंग दी जायेगी, जिसमें महिलाओं के अधिकारों और सुरक्षा से जुडी जानकारी को बताया जायेगा। समानता की धारणा को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थी स्त्री एवं पुरूष कोई भी हो सकता है।

NCERT (2013) जेंडर एंड वीमेन इम्पावरमेंट VOL III मिलिनियम डवलपमेंट गोल यूनिवर्सल (MGD) के अनुसार, माता-पिता के लिए बालिका शिक्षा के महत्व को पहचानना, लड़कियों के लिए समुदाय के भीतर अपनी क्षमता का प्रदर्शन करने में सक्ष्म होना, लड़कियों के साथ हो रहे अन्याय और अत्याचार के खिलाफ बोलने के लिए आगाह करें, लड़कियों के अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और समान अवसर तक पहुंच को सक्षम करना।

1.3 सामाजिक मूल्य- सामाजिक मूल्य किसी संस्कृति के आधारभूत तत्व है जो उसकी अभौतिक विशेषताओं को अभिव्यक्त करते है। मूल्य समाज मे लोगों को यह बताते है कि उनके लिये क्या उचित और महत्वपूर्ण है।

प्रत्येक समाज मे मावन व्यवहार के संचालन, नियंत्रण एवं निर्देशन के लिए कुछ आदर्श एवं लक्ष्य होते है, जिनके प्रति समाज के सभी सदस्य श्रध्दा रखते है और उसके अनुकूल अपना व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन व्यतीत करते है। ये आदर्श या लक्ष्य एक प्रकार के सामाजिक मानदंड होते है जो समाज के सदस्यों को उचित-अनुचित, योग्य-अयोग्य, भला-बूरा नैतिक-अनैतिक, पाप-पुण्य आदि की व्याख्या करने मे सहायक होते है। सामाजिक मूल्य सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों व क्रियाओं जैसे परिवार, विवाह, जाति, वर्ग, धर्म, राजनीति, आर्थिक जीवन आदि से सम्बंधित होते है। ये मापदंड मनुष्य के ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक तीनों पक्षों से संबंधित कार्यकलापों को वांछित दिशा की ओर निर्देशित करते रहते है। समाज में प्रत्येक मनुष्य अधिकतम अपना हित साधनों का प्रयास करता है जिससे समाज में विभिन्न व्यक्तियों एवं व्यक्ति समूहों के मध्य विवाद या संघर्ष उत्पन्न होता है। सामाजिक हित को ध्यान में रहते हुए इस विवाद को सुलझाना ही सामाजिक न्याय कहलाता है। समाज में विभिन्न व्यक्तियों की योग्यताएं एवं क्षमताएं भिन्न-भिन्न होती हैं लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि उनकी योग्यता एवं विभिन्नता के बावजूद भी सबको अवसर की समानता हो और एक ऐसी सामाजिक-आर्थिक स्थिति का निर्माण हो सके जिसमें सभी लोग अवसर की समानता का उपयोग कर सकें।मूल्यों से आशय उन गहरे नैतिक आदर्शों से है जिन्हें प्राप्त करने के लिये नैतिक नियम बनाए जाते हैं। उदारहण के लिये, शांति, न्याय, सहिष्णुता, आनंद, ईमानदारी, समयबद्धता, समानता आदि प्रसिद्ध मूल्य है। मूल्यों के संबंध में समाज की समझ होती है कि वे सामाजिक जीवन को संभव व श्रेष्ठ बनाने के लिये आवश्यक है। सामाजिक मूल्यों के अंतर्गत राजनीतिक मूल्य, पारिवारिक मूल्य, धार्मिक मूल्य, व्यावसायिक मूल्य आदि आते हैं।

सामाजिक मूल्यों का महत्व. मनुष्य की आधार भूत इच्छाओं तथा आवश्यकताओं की संतुष्टि करने में मूल्यों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। सामाजिक मूल्य समाज में एकता, संगठन व नियंत्रण बनाए रखते हैंएजीवन को सामाजिक मूल्य निम्नांकित ढंग से प्रभावित करते हैं-

- सामाजिक मूल्य भौतिक संस्कृति का महत्व बढ़ाते हैं।
- सामाजिक मूल्य समाज में एकरूपता उत्पन्न करते हैं।
- सामाजिक मूल्य व्यक्ति के व्यवहार एवं प्रगति के लिए महत्वपूर्ण होते हैं।
- सामाजिक मूल्य सामाजिक भूमिकाओं का निर्देशन करते हैं।
- सामाजिक मूल्य सामाजिक संगठन व एकीकरण में सहायक होते हैं।
- सामाजिक मूल्यों के द्वारा सामाजिक क्षमता का मूल्यांकन किया जाता है।
- सामाजिक मूल्य सामाजिक नियंत्रण में सहायक होते हैं।
- बदलते हुए समय में परिवर्तित सामाजिक मूल्यों को अपनाया जाता है।
- सामाजिक मूल्यमानव आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक होते हैं।
- सामाजिक मूल्य मानवीय मूल्यों व आदर्शों के स्रोत होते हैं।
- सामाजिक मूल्य व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं।

सामाजिक मूल्य समाज के सदस्यों की आन्तरिक तथा मनोवैज्ञानिक भावनाओं पर आधारित होते हैं। सामाजिक मूल्य सामाजिक एकरूपता के जनक हैं, क्योंकि मूल्य व्यवहार के प्रतिमान अथवा मानकों को प्रस्तुत करते हुए समाज के सदस्यों से अपेक्षा करते हैं कि वे अपने आचरण द्वारा मूल्यों का स्तर बनाए रखेंगे। इस तरह सामाजिक प्रतिमानों के रूप में मूल्यों का निर्धारण होता है। समाज में हमारा संबंध उन मूल्यों से है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक संबंधों से संबध्द हो, विशेष रूप से ऐसे नैतिक व धार्मिक मूल्यों से जिन्होंने किसी अंश तक संस्थात्म स्वरूप धारण किया हो। सामाजिक मूल्य समाज के ऐसे प्रतिमान या अवधारणाएं है जिनके आधार पर हम किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण का मूल्यांकन करते है। जब किसी समाज के स्त्री पुरुष अपने ही तरह के लोगों के साथ मिलते है, काम करते है या बात करते है, तब मूल्य ही उनके क्रमबद्ध सामाजिक संसर्ग को संभव बनाते हैं। छात्र.छात्राओं में प्रेम व सत्य, समानता, सहयोग, अशोषण, सहानुभूति व आदर सामजिक मूल्यों का

विकास होना आवश्यक हैए सामाजिक मूल्यों के विकास से भारत के भविष्य तथा वर्तमान का निमार्ण होना सम्भव होगा।

1.4 कला

शिक्षा को अत्यधिक प्रभावशाली बनाने के लिए **NCF (2005)** के अनुसार प्रत्येक स्तर पर विभिन्न विषयों के रूप में कला को जगह दिए जाने की सिफारिश की गई है जिसमें गायनए नृत्य, दृश्य एवं प्रदर्शन की समस्त कलाओं को शामिल किया गया है ।

कला शिक्षण का उद्देश्य सौन्दर्यात्मक एवं वैयक्तिक चेतना को प्रोत्साहित करना है विविध रूपों को व्यक्त करने की क्षमता को बढावा देना है।

- कलाओं के विभिन्न विधाओं और धरोहर शिल्पों को पाठ्यचर्या में समेकित घटकों के रूप में मान्यता दी गई हैं।
- वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक और सौन्दर्यात्मिक आवश्यकताओं के संदर्भ में उनकी प्रासांगिकता के बारे में माता-पिता, स्कूली अधिकारियों और प्रशासकों में जागरूकता पैदा करना।
- कला को स्कूली शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर शामिल किये जाने पर बल दिया जाना चाहिए।

टालस्टाय के अनुसार (1896) “अपने भावो की क्रियाए रेखा रंग ध्वनि या शब्द द्वारा इस प्रकार अभिव्यक्त करना कि उसे देखने या सुनने में भी वही भाव उत्पन्न हो जाए कला है।” हृदय की गहराईयों से निकलने वाली भावनाऐं जब कला का रूप लेती है कला आत्मिक शान्ति का माध्यम है इसी के माध्यम से कलाकार अपने विचारों को साकार रूप प्रदान करता है या कर सकता है।

कला शिक्षा वह प्रक्रिया है जो संवेदी भावों को विस्तृत कर देती है यह उन अभिव्यक्तियों के सृजन हेतु विचारों और सामग्रियों के साथ काम करने का मंच प्रदान करती है जिन्हें केवल शब्दों द्वारा व्यक्त नही किया जा सकता। यह गैर मौखिक अभिव्यक्ति को व्यक्त करने के लिये प्रोत्साहित करती

है चाहे वह गीत के रूप में हो या फिर पेटिंग या प्रदर्शन के रूप में कला की प्रभावशीलता को ध्यान रखते हुये नई **शिक्षा नीति 2020** में कला समेकित अधिगम को शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने के उद्देश्य से सम्मिलित किया गया।

कला समेकित शिक्षा की अवधारणा विभिन्न विषयों के साथ कला के एकीकरण करने से है। कला समेकित शिक्षा में कला को पाठ्यक्रम का मुख्य हिस्सा बनाते हुए शिक्षण किया जाता है विभिन्न कला रूपों का उपयोग करके विषय-वस्तु की अमूर्त अवधारणाओं को स्पष्ट किया जाता है। कला विद्यार्थी को अवलोकन करना, विचार करना, कल्पना करना, खोज करना, प्रयोग करना, तर्क करना, सृजन तथा व्यक्त करने के अवसर प्रदान करती है। कला मनौवैज्ञानिक रूप से संज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक पक्षों पर प्रभाव डालती है तथा शिक्षार्थियों का समग्र विकास में मदद करती है।

- कला समेकित शिक्षा कुशलता एवं क्षमताओं की वृद्धि का सशक्त माध्यम है।
- बच्चों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने तथा अनुभवों को विकसित करना।
- संवेदी भावनाओं को प्रकार करने, जीवन कौशल विकसित करने भाषाई कुशलता के साथ -साथ कल्पनशीलता, सवेदनशीलता आदि क्षमताओं का विकास करना।
- सीखने की प्रक्रिया को अनुभवात्मक बनाने में कला समेकित शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका रखता है।

शिक्षा का माध्यम छात्रों में कौशल व प्रवृत्तियाँ उत्पन्न करने वाला तथा बोध कराने वाला हो जिससे मानसिक संरचनाओं का विकास हो सकें। इस दृष्टि से कला शिक्षा का एक ऐसा माध्यम है, जो कलात्मक सामाजिक, अध्यात्मिक व सृजनात्मक विकास से महत्वपूर्ण स्थान रखते है कला न केवल व्यक्तिगत गुणात्मक वृद्धि करती है बल्कि सामाजिक सरोकार मूल्यों व वर्तमान चुनौतियों का सामना करने योग्य बनाती है।

कला को विभिन्न प्रकारों एवं रूपों में बाधना संभव नही है परन्तु अध्ययन की सुविधा के लिए कला एवं नाट्य शिक्षा के क्षेत्र में प्रचलित उपगमों को दो बडे दृश्य कला तथा प्रदर्शन कला भागों में बांटा जा सकता है।

1.4.0 दृश्य कला- दृश्य कला चित्र निर्माण, रचना एवं सम्प्रेषण का एक सशक्त माध्यम है। दृश्य कला छात्रों को काल्पनिक जीवन एवं वास्तविक संसार के बीच स्वस्थ्य सम्बन्ध बनाने में एवं अपने विचारों भावनाओं एवं अनुभवों को दृश्य रूप में नियोजित करने व अभिव्यक्त करने में मदद करती है। दृश्य कला के विभिन्न माध्यम विभिन्न अनुभवों को जोड़कर उनको अर्थ पूर्ण समझने का प्रयास करता है तथा रचनात्मक एवं सौन्दर्यनुभव को बढाता है। दृश्य कला के अंतर्गत चित्रकला, रंग एवं पेंटिंग, मूर्तिकला, क्ले आर्ट तथा रेत कला सम्मिलित है।

दृश्य कला (विज़ुअल आर्ट्स) अपने स्वरूप में प्रत्यक्ष व पृथ्क-पृथ्क रूप में विघटित है दर्शक जितनी बार दृश्य कला से प्रभावित होगा ,उतनी बार आनन्द के साथ नये अर्थ, आशय, मूल्य मर्म अवश्य प्राप्त करेगा। दृश्य कला बालक की निष्क्रयता को कम करती है तथा निरस्ता को कम तथा धीरे-धीरे समाप्त करने में सहायक हो सकती है। दृश्य कला छात्रों की सम्बद्वता के द्वारा अपने हाथ और आँख की क्रियाशीलता द्वारा बहुत से तरीकों से स्वयं को अभिव्यक्त कर पाते है तथा स्वयं की सूक्ष्म अभिव्यक्ति और मनोभावों को कुशलता पूर्वक प्रदर्शित करते है या करने का प्रयास कर सकते है।

1.4.1 प्रदर्शन कला- दृश्य कला से भिन्न प्रदर्शन कला वह प्रकार है जिसमें शारीरिक भाव, संवाद एवं शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से किसी विचार अथवा भाव का अभिव्यक्त किया जाता है । प्रदर्शन कला भाव/विचार/कहानी/नाटक आदि का सम्प्रेषण रंगमंच के विभिन्न अवयवों जैसे अभिनय, पहनावो,दृश्यों, प्रकाश, संगीत, आवाज एवं संवाद के माध्यम से किया जाता है। प्र्रदशन कला को मुख्य रूप से रंग कला (ड्रामा, थियटर आदि) तथा नृत्य कला (अभिनय) दो खंडो में विभाजित किया गया है।

प्रदर्शन कला छात्रों के विभिन्न शिक्षा स्तरों पर शिक्षण को प्रभावशाली एवं स्थायी बनाये रखने में नृत्य, नाटक, कठपुतली, पारम्परिक नृत्य कला, रोल.प्ले, कथा-वाचन एवं संगीत आदि सहायक हो सकते है तथा सीखने के अनुभव का उद्देश्य आनन्द की अनुभूति कराना है एवं विषय वस्तु की बोझिलता को समाप्त करना है। प्रदर्शन कला का प्रयोग छात्रों में आत्म प्रकटन, रचनाशक्ति, स्वतंत्रता की भावना और उच्च मानसिक स्वास्थ्य का विकास करने में सहायक है तथा उनकी जिज्ञासा, कल्पना और आश्चर्य आदि के संवेदन को हद करने में प्रभावी भूमिका रखते है।

NCERT ने कला शिक्षा के क्षेत्र में अपनी भूमिका को और अधिक सुदृढ करने की दृष्टि से अपने स्वयं के कला विभाग की स्थापना की, **डिपार्टमेंट ऑफ एजूकेशन इन आर्ट्स एण्ड ऐस्थेटिक्स (DEAA)** के नाम से विख्यात है। छात्रों के सौन्दर्यात्मक गुणों को विकसित करने और उसे एक आदर्श नागरिक बनाने के लिए इस क्षेत्र में शोध, ट्रेनिंग, ओरिएन्टेशन आदि का विकास किया गया विद्यालय शिक्षा को प्रभावशाली बनाने के लिए कला शिक्षा को महत्वपूर्ण माना गया है ।

नयी शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, कला समेकित अधिगम के अन्तर्गत दृश्य एवं प्रदर्शन कला की विभिन्न विधाओं को सम्मिलित किया गया है जो कि एक दूसरे से सम्बन्धित है जैसे कि चित्रकला, कोलाज, पेटिंग, नृत्य, संगीत (गायन एवं वादन) नाटक, क्ले.मॉडलिंग, ग्राफिक आर्ट, छपाई, मखौटा, कठपुतली बनना आदि है।

दृश्य एवं प्रदर्शन कला विषय की विशिष्ट अनुभूतियों से अनुप्रेरित सजीव सौन्दर्यात्मक सृजन करती है तथा विषय वस्तु के प्रत्यक्ष अनुभव में सहायक है। वर्तमान में प्रत्येक आयु वर्ग के छात्रों के दृश्य एवं प्रदर्शन कला द्वारा शिक्षण प्रभावशाली हो सकता है।

- शिक्षाविद, मनौवैज्ञानिक, न्यूरोराईटिस्ट तथा विकासवादी यह मानते है कि कला शिक्षण के दृश्य एवं प्रदर्शन कला ऐसे माध्यम है जो मनुष्य की संकीर्ण सोच को उच्च तथा सामाजिक, संवेगात्मक, सृजनात्मक एवं स्वतंत्रता व समानता के भाव उत्पन्न करने महत्वपूर्ण कार्य करते है।

- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा 2005 में विभिन्न विषयों में कला समेकित अधिगम तथा कला को माध्यम बनाने की सिफारिश की गयी है।
- नयी शिक्षा नीति 2020 में शैक्षणिक संरचना 5$3$3$4 डिजाइन के आधार पर प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा रंग, आकृतियों पहेलियाँ, नाटक, कठपुतली, संगीत एवं थियेटर द्वारा शिक्षण किया जाना चाहिए।

NCERT ने **NCF 2005** के अनुसार विद्यालयों में कला-शिक्षा के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला गया है, विद्यालयी स्तर पर कला समेकित अधिगम से संबंधित विविध विधाओं को शिक्षण कार्य में शामिल करना चाहिए यह एक ऐसा माध्यम है जो विद्यार्थियों को स्वतंत्रता एवं शिक्षण को प्रभावी बनाता है।

दृश्य एवं प्रदर्शन कला सीखने तथा सिखाने के क्षेत्र में अधिक प्रभावशाली है कला के दृश्य व प्रदर्शन कला उपागम किसी विषय संदर्भ के स्पष्टीकरण को सरल, रोचक, प्रभावशाली एवं स्थायी बनाने के लिये उचित उपकरण साबित होगें।

नयी शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, स्कूल और कॉलेजों में लैंगिक समानता हेतु लैंगिक संवेदीकरण सत्र का आयोजन किया जाना चाहिए जिसमें उनके प्रति होने वाले अवांछनीय व्यवहार तथा उनके प्रति सजगता का विकसित किया जा सके भारतीय संविधान में निहित अधिकारों, समानता के नियमों को परिचित कराने के लिए तथा महिला संरक्षण कानून संबंधी जानकारी को प्रशिक्षण में शामिल किया गया है।

NCERT (2017) प्राथमिक शिक्षक जेंडर मुद्दे पत्रिका के अनुसार, जेंडर समानता के क्षेत्र में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, जेंडर समानता का मतलब यह नही होना चाहिए कि स्त्री और पुरूष एक समान हो जाएं बल्कि यह होना चाहिए कि विकास के अवसर स्त्री या पुरूष होने पर आधारित न हो शिक्षा में सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास, शारीरिक विकास, मानसिक विकास, भाषा विकास इत्यादि

के लिए अनुभव सम्मिलित हो नाटक, कठपुतली के खेल, कहानियाँ कविताऐं आदि का प्रयोग छात्रों के भाषीय विकास के साथ पढने के लिए तैयार करता है।

NCERT (2013) जेंडर एंड स्कूलिंग प्रोसेज (ट्रेनिंग मटेरियल फॉर टीचर एजूकेटर ऑन जेंडर इक्वलिटी एण्ड इमपॉवरमेंट)वॉयूलम ll के अनुसार- पाठ्य पुस्तकें शिक्षण का एक साधन हैए परन्तु एकमात्र साधन नही है शिक्षण प्रक्रिया के दौरान पाठ्य पुस्तकों के साथ साथ पाठ्योतर सामग्री का भी उपयोग किया जाए तो सीखने की प्रक्रिया को रोचक बनाया जा सकता है। विशेषतः लिंग संबंधी मुद्दों के लिए जहां संवेदनशीलता अति आवश्यक है इस प्रकार की पाठ्येतर सामग्री के माध्यम से कक्षा में इन मुद्दों पर चर्चा की जा सकती है पाठ्येतर सामग्री का चयन के आधार बिन्दु निम्नलिखित दिये गये है :-

- पाठ्येतर सामग्री बच्चों की आयु, रूचि तथा परिवेश के अनुकूल हो।
- भाषा सरल तथा सरस हो।
- विधाओं का विस्तृत फलक हो विभिन्न विधाएं कविता कहानी नाटक, भेंटवार्ता समाचार, लोककथा, लोकगीत आदि का चयन बच्चों की भाषा की कक्षा में रूचि बनाए रखने में सहायक होगा।

दृश्य एवं प्रदर्शन कला सीखने तथा सिखाने के क्षेत्र में अधिक प्रभावशाली है कला यह दो उपागम दृश्य व प्रदर्शन किसी विषय संदर्भ के स्पष्टीकरण को सरल रोचक प्रभावशाली एवं स्थायी बनाने के उचित उपकरण है। कला समेकित शिक्षा छात्रों के लैंगिक समानता सशक्तिकरण के प्रति छात्रों को जागरूक करने समानता का भाव उत्पन्न करने में प्रभावशाली सिद्ध हो सकता है। **NCERT के अनुसार,** विद्यालय स्तर पर कला समेकित अधिगम को महत्व दिया गया है, स्कूलों को ऐसी किताब नाटकों और अन्य गतिविधियों का चयन करना चाहिए जो लैंगिक पक्षपात से मुक्त हों। अतः छात्रों के सर्वांगीण विकास एवं समानता व सशक्तिकरण के परिप्रेक्ष्य में कला समेकित अधिगम सहायक सिद्ध होगा तथा दृश्य व प्रदर्शन कला, कला का ऐसा स्वरूप है जो कि छात्र छात्राओं को संकीर्ण विचारों को दूर करने तथा विषय वस्तु ज्ञान के संवर्धन को प्रभावशाली एवं स्थायी बनाने में महत्वपूर्ण है।

1.5 समस्या का प्रादुर्भाव- संविधान के अन्तर्गत धर्म जाति वंश और लिंग आदि के आधारों पर सबको समानता का अधिकार दिया गया है स्वतन्त्र भारत में बदलते समाज के साथ महिलाओं की स्थिति में भी बदलाव आया है उनकी साक्षरता दर बढी है वे आत्मनिर्भर हुई है प्रत्येक कार्यक्षेत्र में उन्होंने अपनी पहचान बनायी है लेकिन इन बदलावों के बावजूद महिलाओं को लेकर सामाजिक मान्यताओं, परम्पराओं मानक व्यवहार और सोच में आपेक्षित बदलाब नही आया है।

WEF (World Economic Forum) वैश्विक लैंगिक अन्तर सूचकांक (2020) के अनुसार, में 153 देशों के सूचकांक में भारत का स्थान (112)वाँ रहा। जबकि श्रीलंका(102),चीन(108),बांग्लादेश(50) तथा नेपाल(101) वीं रैंक प्राप्त करने वाले देश रहे। भारतीय लिंगानुपात वैश्विक स्तर पर सोचनीय रहा, भारत में लिंगानुपात 100 पुरुषों पर 91 महिलाएँ हैं वही पाकिस्तान का लिंगानुपात 100 पुरुषों पर 92 महिलाऐं हैंएसर्वेक्षण लैंगिक समानता के गहरे, जटिल मुद्दों को संबोधित करता है। महिलाओं की शिक्षा, प्रजनन तथा आर्थिक स्थिति के एजेंडे को आगे बढाने पर ध्यान देते हुऐ उन्हें सशक्त बनाना महत्वपूर्ण कार्य है। **मानव विकास सूचकांक रिपोर्टए 2020 HDI (Human Development Index) के अनुसार**, भारत 2019 मानव विकास सूचकांक पर 189 देशों में से 129 रैंक पर है वही रिपोर्ट में कहा गया कि समहू आधारित असमानताएँ विशेष रूप से महिलाओं और लड़कियों को प्रभावित करती है, **लिंग असमानता सूचकांक (GII)** में भारत 162 देशों में 122वें स्थान पर है, रिपोर्ट मे ंकहा गया केवल 14 प्रतिशत महिलाऐं तथा 10 प्रतिशत पुरूष ही लैंगिक पूर्वाग्रह से सुरक्षित है। लिंग आधारित भेदभाव जनित रूढ़िग्रस्त मानसिकता बदलाव लाना आवश्यक है। शिक्षा व्यवस्था में सुनियोजित बदलाब लाकर लैंगिक समानता के प्रति मानसिकता में परिवर्तन किया जा सकता है पाठ्यचर्याए पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों में इस बात पर विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है कि लैंगिक सामानता के प्रति जागरूकता तथा सामाजिक मूल्यों के विकास के दृष्टिकोण से एक प्रभावशाली माध्यम के द्वारा विषय सामग्री का समावेश किया जाए।

लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता तथा सामाजिक मूल्यों को विकसित करने वाली विषय सामग्री को समावेश इस प्रकार से हो जो मानसिकता परिवर्तन के लिए प्रभावकारी सिद्ध हो सकें। कला समेकित अधिगम छात्रों की संवेदना कल्पना शक्ति सृजनात्मकता तथा रचनात्मक गतिविधियों को जागृत करता है।

UNICEF 20 नवंबर 2019 (विश्व बाल दिवस) "गो ब्लू अभियान" का शुआंरम्भ किया गया जिसका उद्देश्य बच्चों के अधिकारों के प्रति जागरूकता तथा प्रत्येक शैक्षणिक संस्थानों द्वारा सुरक्षित तथा न्यायपूर्ण वातावरण उपलब्ध कराने के साथ-साथ गुणवत्तापूर्ण प्रासंगिक एवं दक्षता प्रदान करने वाली शिक्षा उपलब्ध कराना है।

वर्तमान समय में विद्यालयों में माध्यमिक तथा उच्च माध्यिक स्तर के सभी छात्र-छा़त्राओं को गणित, विज्ञान, अंग्रेजी, हिन्दी, आदि विषयों पर ध्यान केन्द्रित कराया जाता है जिससे कारण लैंगिक भेदभाव के प्रति जागरूक व लैंगिक समानता के प्रति सामाजिक मूल्य विकसित नही हो पाते हैं यदि इस प्रकार के प्रकरण सामाजिक विज्ञान की विषयवस्तु में हो तो वह बोझिल तथा नीरस होने के कारण प्रभावशाली नही हो पाते है। जोशी पूनम (2015), राय अवधेश नारायण (2016), सक्सेना स्वाति (2015), सिंह संतोष कुमार (2016), राय सरोज (2016), सिंह धनबीर (2018), गुप्ता नेहा (2015) के शोध अध्ययन से ये ज्ञात हुआ की विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियो को संवैधानिक अधिकारों, लैंगिक समानता, साक्षरता, सामाजिक मूल्यों तथा जागरूकता हेतु कुछ विशिष्ट लक्ष्यो का ढांचा निर्धारित किया जाए, वही सयुंक्त राष्ट्र सामाचर (11अक्टूबर 2018) रिक बजोर्नासए इंडिया टुडे नई दिल्ली (17अप्रैल 2020), टाइम्स ऑफ़ इंडिया (22सितम्बर 2020), द डिप्लोमेंट (27अप्रैल 2020) बंसरी कामदार अनुसार दुनिया पूर्ण लैंगिक सामनता से 100 साल दूर है, भारत का लिंग अंतर कई विकासशील देशो से पीछे है लैंगिक समानता के लिए पुरुषों को शामिल करना महत्पूर्ण भूमिका निभाता है वर्तमान महामारी कोविड-19 के चलते लिंग असामनता तथा घरेलू हिंसा से संबधित मामले सामने आये अतः लिंग संवेदनशील नीतियों

के प्रति जागरूक बनाने की आवश्यकता है तथा महिलाओं को सभी क्षेत्रों में सशक्त बनाने, मजबूत अर्थव्यवस्था के निर्माण करने, विकास और स्थिरता के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समस्त लक्ष्यो को प्राप्त करनेए लिंग आधारित भेदभाव को ख़त्म करने और आर्थिक संसाधनों, सामाजिक मूल्यों, शिक्षा तथा अवसरों की समानता के लिए जारूकता लाना आवश्यक है क्योंकि वर्तमान समय में भी वह अलग-अलग कार्यक्षेत्र में शोषण और उत्पीड़न हो रहा है अतः आवश्यक है कि विद्यालय स्तर पर विधार्थियों को लैंगिक समानता, साक्षरता, मानवाधिकार, सामाजिक मूल्यों, संवैधानिक उपबंधों के प्रति जागरूक बनाया जाये। लैंगिक समानता के प्रकरण को उच्च माध्यमिक स्तर पर प्रत्येक वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के विषय वस्तु में अनिवार्य कर दिया जाये तो लैंगिक असमानता के प्रति जागरूकता व सामाजिक मूल्यों को विकसित करने में सहायता प्राप्त हो सकती है। विषय प्रकरण को अधिक प्रभावशालीए रोचक व तनाव मुक्त बनाने लिए कला समेकित शिक्षण का प्रयोग कर सकते हैं। कला की विभिन्न विधाओं के माध्यम से लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता व सामाजिक मूल्यों को विकसित करने से सम्बंधित प्रकरण को प्रभावशाली बनाया जा सकता है। कला के द्वारा संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठकर लैंगिक असमानता को समाप्त कर सकते है। कला व्यक्ति के मन में बनी स्वार्थ, परिवार, क्षेत्र, धर्म, वंश, लिंग तथा जाति आदि की सीमाओं को मिटाकर विस्तृत और व्यापकता प्रदान करती है यह व्यक्ति के मन को उदान्त बनाती है वह व्यक्ति को स्व से निकलकर वसुधैव कुटुम्बक्रम से जोड़ती है।

यह सब कैसे संभव होगा, कुछ विचार है, कुछ संकल्प भी हैं, जो कहते है कि हर स्कूल के लिए कला शिक्षा हो या न हो और यह भी जरूरी नही है कि हर शिक्षक कलाकार हो पर अपेक्षा है कि शिक्षकों की दृष्टि तथा विषयवस्तु का निर्माण कलात्मक और सौन्दर्य बोध से युक्त हो, जिससे दिया गया ज्ञान पूरी संवेदना के साथ विद्यार्थियों को प्रभावित करें तथा एक स्थायी ज्ञान का निर्माण करे। कला समेकित

अधिगम में कला शिक्षा के दृश्य व प्रदर्शन कला उपागम के द्वारा विषय वस्तु की कलात्मक गतिविधियो की चर्चा की गयी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, शिक्षा का अधिकार NCF 2005 तथा नई शिक्षा नीति (2020) के अनुसार "कला शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के बहुमुखी विकास में योगदान देने वाला सकारात्मक अनुभव एवं स्थायी व प्रभावी ज्ञान का विकास करना है।" उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों का कला तथा विज्ञान वर्ग के विषयों का चयन करने पर सर्वाधिक ध्यान केन्द्रित रहता है वह मानसिकता परिवर्तन तथा रूढ़िग्रस्त परम्पराओं विचारधाराओं के बदलने पर ध्यान नही दे पाते जिसके कारण उनके लैंगिक पूर्वाग्रह को समाप्त करने की भावना स्थापित नही पाती है जो वैश्विक स्तर पर भारत की स्थिति को सुदृढ नही बना पा रहा है इसी परिप्रेक्ष्य में शोधार्थी के मन में इच्छा जाग्रत हुई कि उच्च माध्यमिक स्तर पर लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता व सामाजिक मूल्यों को विकसित करने की आवश्यकता हैए परन्तु विषय को प्रभावशाली बनाने के लिए कला समेकित अधिगम की दृश्य व प्रदर्शन कला का प्रयोग किया जा सकता है। उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं में इस विषय के प्रति नीरस्ता को समाप्त करने के लिये दृश्य व प्रदर्शन कला की प्रयोग करते हुए कला समेकित लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता व सामाजिक मूल्यों को विकसित करने कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल तैयार करने का प्रयत्न किया जायेगा।

1.5.0 समस्या कथन- कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल का विद्यार्थियों की जागरूकता व सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन।

1.5.1 अध्ययन में प्रयुक्त पदों की व्याख्या -

कला समेकित मॉड्यूल- कला समेकित शिक्षा अनुभावात्मक अधिगम का एक शैक्षाणिक तरीका है। कला का अन्य विषयों के साथ एकीकरण विभिन्न प्रकार की कलाऐं जैसे- दृश्य कला, प्रदर्शन कला और

साहित्य कला शिक्षण अधिगम सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं का एक अभिन्न अंग बनकर शिक्षण को रोचक बनाना है।

मॉड्यूल- मॉड्यूल का शाब्दिक अर्थ मॉडल शब्द से बनता है मॉड्यूल एक स्वतन्त्र इकाई हैए जिसके अन्तर्गत छोटी- छोटी इकाईयों को विषय वस्तु के रूप में संकलित किया जाता है।

प्रस्तुत शोध में कला समेकित मॉड्यूल का आशय एक ऐसी इकाई का विकास करने से है जिसमें कि दृश्य कला एवं प्रदर्शन कला का प्रयोग किया जाएगा तथा विषय संबंधी सम्पूर्ण जानकारी कला के माध्यम से प्रदान की जाएगी जो व्यवहारिक अनुभव आधारित एवं प्रभावशाली होगी।

लैंगिक समानता- लैंगिक (जेंडर) समानता का अर्थ समाज में महिला तथा पुरुष के समान अधिकार, दायित्वए रोजगार के अवसरों, सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक, राजनैतिक, पारिवारिक अवसरों की समानता का होना है।

प्रस्तुत शोध में लैंगिक समानता से संबधित प्रत्ययों के ज्ञान को स्पष्ट करने का प्रयास किया जायेगा।

जागरूकता- जागरूकता का तात्पर्य स्वयं की क्षमताओं को पहचानने से है तथा शक्ति व क्षमताओं के आधार पर अपना अस्तित्व बनाना है।

प्रस्तुत शोध में लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता को बढावा देने के लिए लैंगिक समानता संबंधी अधिकारों, उत्पीडन संबंधी संवैधानिक जागरूकता को सम्मिलित करने का प्रयास किया जायेगा।

सामाजिक मूल्य- सामाजिक मूल्य विभिन्न सामाजिक घटनाओं के मूल्यांकन करने का वह पैमाना है जो किसी घटना-विशेष के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। सामाजिक मूल्य प्रत्येक समाज के वातावरण और परिस्थितियों के वैभिन्न्य के कारण अलग-अलग होते हैं। ये मानव मस्तिष्क को विशिष्ट दृष्टिकोण प्रदान करते हैं, जो सामाजिक मूल्यों के निर्माता होते हैं। प्रत्येक समाज की सांस्कृतिक विशेषताएें, अपने समाज के सदस्यों में विशिष्ट मनोवृत्तियाँ उत्पन्न कर देती हैं जिनके आधार पर भिन्न-भिन्न विषयों और परिस्थितियों का मूल्यांकन किया जाता है।

प्रस्तुत शोध में लैंगिक समानता से संबधित अधिकार, कर्त्तव्य, न्याय, सामाजिक समानता व नैतिकता संबंधी सामाजिक मूल्यों को विकसित करने का प्रयास किया जायेगा।

कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल में कला समेकित अधिगम के दृश्य व प्रदर्शन कला के विभिन्न उपागमों का प्रयोग किया जायेगा। उच्च माध्यमिक स्तर पर लैंगिक समानता मॉड्यूल को कला समेकित अधिगम के दृश्य एवं प्रदर्शन कला के उपागमों का अनुकरण करते हुये शिक्षण कार्य सम्पन्न किया जा सकता है जिसमें विद्यार्थियों में विषय के ज्ञान को रोचक प्रभावशाली, स्थायी एवं उपयोगिता प्रदान करने में सहायता प्रदान कर सकता है।

1.6 शोध अध्ययन का औचित्य-

शिक्षा व्यक्ति के निर्माण करनेए उसकी सामाजिक-आर्थिक, नैतिक समस्या समाधान तथा आत्मविश्वास की पूर्ति करने में महत्वपूर्ण योगदान देती है शिक्षा की गतिशीलता को बनाए रखने नवीन मूल्यों के निर्माण में औपचारिक शिक्षा की व्यवस्था विद्यालय के माध्यम से पूर्ण होती है। जॉन डयूवी 1907 के अनुसार, विद्यालय समाज का लघु रूप है। प्रत्येक विद्यालय समस्त छात्र-छात्राओं के प्रति समानताए न्याय पूर्ण व्यवस्था प्रदान करनेए पूर्वाग्रहों से लिप्त विचारों को समाप्त करने तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य के नवीन विचारों के सर्जन करने व निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षकों की भूमिका विद्यालय तथा समाज के निर्माण करने एवं भविष्य में एक दृढ़ राष्ट्र की रचना कर्त्ता के रूप में मानी जाती है। शिक्षक छात्रों के नवजागरण के रूप में कार्य करते हैं तथा छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करते हैं एक शिक्षक विषय वस्तु को प्रभावशाली तरीकों से छात्रों के सामने प्रस्तुत करें तो छात्रों के ज्ञान संवर्धन का विकास अवश्य होगा। इस संदर्भ में कला समेकित अधिगम को शिक्षण के मुख्य घटक के रूप में महत्वपूर्ण माना गया है, कला समेकित शिक्षा की अवधारणा से तात्पर्य विषयों के साथ कला के एकीकरण करने से है विभिन्न प्रकार की कलाएं जैसे दृश्य कला, प्रदर्शन कला और साहित्य कला शिक्षण अधिगम तथा सीखने सिखाने की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग बनकर शिक्षण को रोचक

और मजेदार बनाती है। पाठ्यक्रम को कला समेकित बनाए जाने से कला कक्षा-कक्ष में सीखने का आधार बन जाती है। कला अमूर्त अवधारणाओं को स्पष्ट करने में तथा विषय वस्तु को तार्किक, विद्यार्थी केंद्रित और अर्थ पूर्ण तरीके से जोड़ने के साधन प्रदान कर सकती है। कला को केंद्र बिंदु से में रखकर गणित, विज्ञान, समाजिक विज्ञान तथा भाषाओं और उनकी अमूर्त अवधारणाओं के बीच एक संबंध स्थापित किया जा सकता है तथा विषय-वस्तु प्रभावी, सीखने में समग्र, आनंदमय और अनुभावात्मक बनाया जा सकता है। **नई शिक्षा नीति 2020** कला समेकित शिक्षण द्वारा शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने के लिए ध्यान दिया गया है। इस प्रकार कुछ सामाजिक मुद्दे जो भारत के विकास में अवरोध है उनके प्रति जागरूकता तथा ज्ञान के विकास के लिए कक्षा-कक्ष में कला समेकित अधिगम प्रभावशाली होगा। इसी संदर्भ में लैंगिक समानता को कला समेकित अधिगम के माध्यम से उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं को विदित तथा जागरूकता बनाया जा सकता है कला शिक्षण वह प्रक्रिया है जो संवेदी भावों को बढ़ावा देती है, अभिव्यक्ति के सर्जन हेतु विचारों और कला सामग्रियों के साथ अपने मनोभावों के प्रदर्शन हेतु एक मंच प्रदान करती है मुख्य रूप से दृश्य तथा प्रदर्शन कला ऐसी कला है जो गैर मौखिक अभिव्यक्ति के प्रदर्शन को प्रोत्साहित करती हैं कला अपने मन की भावनाओं को व्यक्त करने में मदद करती है तथा शिक्षित से अशिक्षित, विशेष आवश्यकता से सामान्य आवश्यकता वाले तथा लड़कों व लड़कियों के कला कार्य में अंतर नही करती हैं कला स्वयं पूर्वाग्रहों से मुक्त है तथा पूर्वाग्रहों को समाप्त करने में सहायक सिद्ध होगी, कला समेकित अधिगम लैंगिक समानता के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता व सामाजिक मूल्यों को विकसित करने में सकारात्मक प्रभाव डालेगा। **नई शिक्षा नीति 2020** "कला समेकित अधिगम दृश्य एवं प्रदर्शन कला के मुख्य आयाम है, जिसमें नाटक का मंचन, संवेदी भावना को प्रकट करने के लिए चित्रकला, सामूहिक पोस्टर, ऑडियो-वीडियो, संगीत, कविता, कहानियां, कठपुतली, नृत्य आदि लैंगिक समानता के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता व सामाजिक मूल्यों को विकसित करने में सकारात्मक अनुभव, समस्या

समाधान, जानकारी व विचारों में परिवर्तन तथा नवीन मूल्यों के विकास को प्रभावशाली बनायेगा, दृश्य एवं प्रदर्शन कलाएं सकारात्मक प्रभाव डालेगी तथा छात्र-छात्राओं की सहभागिता सुनिश्चित कर सकते है" जैसा कि कुछ अनुसंधकर्ताओ ने बताया है-

1.6.0 साहित्य का पुनरावलोकन-

- **गिवरायी जूलिया यूल एप्रैम. वुतुजा, क्रिस्टीना (2017) थिएटर टू द जेंडर वायलेंस रेडियो ड्रामा इंटरवेंशन इन जिंबाब्वे-** प्रसतुत अध्य्यन में रेडियो नाटक हस्तक्षेपो के माध्यम से लिंग आधारित हिंसा (GBV) से लड़ने में सामुदायिक भागीदारी की भूमिका की जांच करता है। अध्य्यन का उद्देश्य लिंग आधरित हिंसा को खत्म करने के प्रयासों में सामुदायिक भागीदारी को उजागर करना था। केस स्टडी डिजाइन को डाटा एकत्र करने के लिए परिचालन ढांचे के रूप में अपनाया गया था, रिमेंबरिंग माय रिवार्ड को ध्यान में रखते हुए सावन ट्रस्ट लिंग आधारित हिंसा वीडियो नाटक हस्तक्षेप के माध्यम से डाटा एकत्रित किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि सामुदायिक भागीदारी खोज के अंतर्गत राष्ट्रीय स्तर पर वीडियो के माध्यम से जेंडर बेस वायलेंस (GBV) पर एपिसोड से एक बड़े समुदाय पर सकारात्मक प्रभाव का आकलन किया गया। लेकिन उन्होंने पाया कि इस प्रक्रिया में जन भागीदारी एवं परियोजना में अवरोध की समस्या है जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है।
- **स्ट्रेंग मार्लीन कैथरीन (2017) क्रिएशन कन्वैक्शनल एक्टिविटी एम्पोवेर्मिंग यंग वूमेन थ्रू डांस रिफॉर्म-** इस अध्ययन का उद्देश्य यह पता लगाना था कि क्या नृत्य आशुरचना पाठ्क्रम युवा महिलाओं को अपने बातचीत कौशलों को मजबूत करने में मदद कर सकता है तथा क्या छात्र डांस इंप्रूवमेंट के माध्यम से महत्वपूर्ण बातचीत कौशलों को सीख सकते हैं। इस अध्ययन के द्वारा डांस इंप्रोवाइजेशन प्रैक्टिस के फायदों का आकलन किया व देखा गया की डांस क्लास रूम के बाहर रोजमर्रा जीवन के लिए यह कैसे लागू हो सकती है। अध्ययन में प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया तथा अध्ययन में डेटा का विश्लेषण करने के लिए गुणात्मक तथा मात्रात्मक दोनों तरीकों का इस्तेमाल किया। अध्ययन के

निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि पाठ्यक्रम में डांस एक्टिविटी एम्पोवेर्मिंग बातचीत कौशल के द्वारा विकासशील कलाकारों, समुदाय के सदस्यों और लीडर के रूप में छात्रों पर सकारात्मक प्रभाव डाला है।

- **डांटे एंड व्यू (2016) द रिसेप्शन ऑफ डांटे इन विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स-** डांटे ऑन व्यू पुस्तक में डांटे द्वारा किए गए अध्ययन में महत्वपूर्ण एवं नए आयामों को वर्णित किया है। अध्ययन में प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया है तथा अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि दृश्य एवं प्रदर्शन कला वैचारिक छवि को उभारता है तथा मंच पर कार्य करने वाले पाठकों और कलाकारों के प्रदर्शन को प्रोत्साहित करते हैं।
- **रिचर्डसन सुसान एस. क्लेन बारबरा अन्य हैंडबुक ऑफ़ अचीविंग जेंडर इक्वलिटी थ्रो एजुकेशन, जेंडर इक्वलिटी इन विजुअल आर्ट एंड डांस एजुकेशन (2014)-** प्रस्तुत अध्य्यन का उद्देश्य अमरिकी समाज मे दृश्य और प्रदर्शन कला के द्वारा लिगं आधरित शिक्षा को प्रभावित कर सकता है दृश्य कला और प्रदर्शन कला औपचारिक शिक्षा में लैंगिक समानता के मुद्दों को प्रस्तुत करते हैं, जिसके अनुसार महिला आंदोलनों का अमेरिकी समाज में दृश्य और प्रदर्शन कला का गहरा प्रभाव पड़ा है। अध्ययन में प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया तथा उपकरण के रूप में प्रश्न पूछे गए हैं, शोध अध्ययन के प्राप्त परिणामों में शिक्षक कला में नारीवादी मुद्दों और सामग्री के बारे में अपना ज्ञान बढ़ाते हैं और अपनी कक्षा में जेंडर इक्वलिटी के मुद्दों के समाधान के लिए शिक्षण रणनीति का विकास करते हैं दृश्य और नृत्य कला औपचारिक शिक्षा में जेंडर इक्वलिटी के मुद्दों को प्रस्तुत करते हैं। शिक्षण के दृष्टिकोण, प्रथाओं, सीखने के नेतृत्व और संसाधनों के संदर्भ में दृश्य और नृत्य कला जेंडर इक्वलिटी के प्रयासों का छात्रों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- **फ्रीडमन कैरी (2014) इंट्रप्रेटिंग जेंडर एंड विजुअल कलचर इन आर्ट क्लासरूम-** इस अध्य्यन का उद्देश्य कला संबंधी शिक्षा की व्यपाक परिभाषा के संदर्भ में लैंगिक मुद्दो को प्रस्तुत करना है। शोध में प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया। अध्य्यन के निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि कला शिक्षा विविधता

की सीमा के अंतर्गत गहरी समझ जा निर्माण करती है कल सामाजिक पुनर्गठन पर स्कूली शिक्षा का ध्यान केंद्रित करती है, लैंगिक समानता के विषय की चर्चाओं पर ध्यान केंद्रित करती है तथा मार्गदर्शन व जटिल समस्याओं के समाधान के लिए सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

- **ब्योर्क सेसिलिया, रैपर्ट एन.आर आर्ट मोनिटर (2011) क्लेमिंग स्पेशः डिशकरेज ऑन जेंडर, पोपुलर म्यूजिक एंड सोशल चेंज-** शोध अध्ययन का उद्देश्य लोकप्रिय संगीत एवं सामाजिक परिवर्तन में विचारों के निर्माण के लिए जेंडर इक्वलिटी संगीत के संदर्भ में भाषा का प्रयोग कैसे किया जाता है शोध हेतु प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया। अध्य्यन के निष्कर्ष से प्राप्त होता है कि सशक्तिकरण और वस्तुकरण के बीच चल रहे संघर्ष से द्वंदात्मकता का निर्माण होता है। अभियान के द्वारा अनुशासनात्मक तथा लैंगिक परिवर्तन में विचारों के निर्माण में संगीत सकारात्मक प्रभाव डालता है।
- **कैथकॉन लुईस व्हाइट (2011) क्रिएटिंग ए स्पेस फॉर यंग वूमेन वॉइसःयूजिंग पार्टिसिपेटरी वीडियो ड्रामा इन यूगांडा-** अनुसंधान का उद्देश्य लिंग संवेदनशील रणनीतियों को बढ़ाने के दृष्टिकोण के साथ युगांडा में यौन स्वास्थ्य के संबंध में युवा महिलाओं के अनुभवों का पता लगाना है खोजपूर्ण प्रणाली पार्टिसिपेटरी वीडियो ड्रामा का निर्माण किया गया जिसका प्रयोग शोध में शामिल युवा महिलाओं ने अपने जीवन के बारे में कहानियों को प्रस्तुत करने के लिए इस्तेमाल किया गया। शोध अध्ययन में विकासात्मक प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया शोध निष्कर्ष से प्राप्त होता है कि (PVD) एक ऐसा मंच प्रदान करता है कि वह ड्रामा के माध्यम से आने वाले मनोभावों को प्रदर्शित करने तथा ड्रामा देखने वाले बहुत अधिक प्रभावित होते हैं तथा समस्या समाधान प्राप्त करते हैं। (PVD) प्रोग्राम समस्या समाधान में सकारात्मक प्रभाव प्रदर्शित करता है।
- **आर्लेंडर एनेट (2010) द रूटीन कम्पैनियन टू रिसर्च इन द आर्ट, करैक्टरस्टिक ऑफ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स-** कॉम्पैन के अंतर्गत कलाकारों द्वारा किए गए शोध पर चर्चा की जहां कलाकृतियों और कलात्मक अभ्यास अनुसंधानओं का हिस्सा है। जिसे अनुसंधान के रूप में आयोजित किया गया है

प्रयोग की मुख्य भूमिका मौलिकता, नवीनता व व्याख्या पर कला की धारणा का प्रभाव का अध्ययन है जिसमें कलाकार की स्थिति सहयोग आदि सम्मिलित है। निष्कर्ष ज्ञात होता है कि दृश्य व प्रदर्शन कला की विभिन्न विधाएं अलग-अलग तरीकों से औपचारिक विशेषताओं और समस्या समाधान में सकारात्मक प्रभाव डालती है।

- **कर्टिस निक रे, इयांरेव डीजे (2005) क्रिएटिंग इंस्पिरेशनः हाउ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट स्पेस द बिहेवियर ऑफ द इन्वायरमेंट-** अध्ययन का उद्देश्य दृश्य और प्रदर्शन कलाएँ पर्यावरण व्यवहार को कैसे आकार देती है तथा पर्यावरण स्थिरता को बढ़ावा देने वाले लोगों विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में उनका बेहतर उपयोग कैसे किया जा सकता है। शोध विधि के रूप में केस स्टडी तथा पर्यावरणीय पहल में दृश्य एवं प्रदर्शन कला शामिल को शामिल किया गया है। अध्ययन संगीत, त्योहार, सम्मेलन, थिएटर शामिल किए गए, मुख्य रूप से ग्रीन हाउस प्रभाव भूमि, पानी तथा वनस्पतिक मुद्दों आधारित, आद्रभूमि और जैव विविधता संरक्षण मुद्दों को शामिल किया गया। निष्कर्ष से प्राप्त होता कि कला कार्यक्रम लोगों को प्राकृतिक के साथ मानवता के संबंधों पर विचार के लिए प्रेरित करता है। अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करता है तथा व्यपाक रूप से विचारशीलता तथा प्रभावशीलता को उत्पादित करता है।
- **लाएन ब्रुलेटर (2009) हाउ द आर्ट्स चिल्ड्रन तो क्रीट हैल्थी सोशल स्क्रिप्ट्स :एक्सप्लोरिंग द परसेप्शन एलीमेंट्री टीचर -** प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक शिक्षकों के साथ साक्षात्कार के माध्यम से बालको के विकास कला की भूमिका के बारे में अंतदृष्टि प्रदान करता है आर्टिस्ट-इन रेजिडेंस प्रोग्राम में भाग लिया गया जिसके द्वारा प्राप्त निष्कर्षो से ये ज्ञात होता है कि कला के अनुभव और नाट्य गतिविधियाँ बच्चों के प्रति प्रतिक्रिया ,भावनात्मक अभिव्यक्तियों तथा अन्य सामाजिक ेकार्यो समझ विकसित करने में मदद करता है।
- **दास शीलता (2013) फोक थिएटर इट्स रेलेवंस इन डेवेलपमेंट कम्युनिकेशन इन इंडिया-** भारतीय संस्कृति में लोक रंगमंच स्थानीय पहचान और सामाजिक मूल्यों में अन्तर्निहित है शोध अध्ययन से

ज्ञात होता है कि लोगो में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए नाट्यकला का महत्वपूर्ण सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मुद्दों के प्रचार के लिए भारत में लोक रंगमच का बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया है निष्कर्ष से ज्ञात होता है मानव संचार के सभी प्रकार की हानिकारक बाधाओं को समाप्त करने में यह प्रभावशाली कला है

- **जोशी सिंधुजा तुषार (2017) इंपैक्ट ऑफ़ एडवरटाइजमेंट ऑन वीमेन एंपावरमेंट इंडिया-** शोध अध्ययन का उद्देश्य विज्ञापन विकासशील देशों में लोगों को जागरूक करने का प्रभावी साधन है ,विज्ञापन द्वारा महिलाओं को विनम्र देखभाल करने वाले रूप में, बच्चों के पालन पोषण, महिलाओं की सराहना तथा सशक्त रूप से चित्रित किया गया है तथा निष्कर्ष से प्राप्त होता है कि भारतीय महिलाओं को सशक्त बनाने मे दृश्य-मौखिक कल्पना संचार एक प्रभावशाली तकनीकी है जिससे लोगों के मूल्यों, दृष्टिकोणों और व्यवहार में अत्यधिक परिवर्तन होता है।
- **NCERT डिपार्टमेंट ऑफ जनरल स्टडी (2013-2016) द टैक्स्टबुक एनालिसिस प्रोजक्ट फार्म जेंडर पर्सपेक्टिव ऐम टू एक्साइमिंग स्कूल टैक्सटबुक इन ऑल सबजेक्ट एरिया फार्म विजुअल आर्ट्स-** शोध विधि के रूप में विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है। शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य पाठ्य पुस्तकों के लिंग आधारित नजरिए से परखना, पाठ्य पुस्तकों में सकारात्मकता पर प्रकाश डालें तथा पाठों को लिंग समावेशी बनाने के तरीके प्रस्तुत किये जायें। शोध के निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि किताबों द्वारा लिंग का समायोजन तथा कुछ पाठ्य पुस्तकों के अंदर लिंगानुपात में गिरावट के मुद्दो का सकारात्मक निवारक के संबोधन का उल्लेख करते हैं। शिक्षक की गतिविधियों और कार्यप्रणाली लिंग समावेशन विषय में बच्चों की भागीदारी को प्रोत्साहित करते हैं। दृश्य सामग्री महिलाओं की स्थिति में निरंतरता और परिवर्तन को प्रतिबिंबित करने पर अधिक जोर देती है। प्राथमिक स्तर पर हिंदी और और गणित की पुस्तकों पर बालिका शिक्षा तथा लैंगिक समानता हेतु चित्रण सकारात्मक प्रभाव प्रक्षेपित करता है।

- **विधि एवं न्याय मंत्रालय भारत सरकार एवं संयुक्त राष्ट्र कार्यक्रम (UNDP) द्वारा संचालित एक्सेस टू जस्टिस परियोजना (2013)-** इस पर परियोजना का मुख्य उद्देश्य प्रौढ़ शिक्षा के साथ-साथ कानूनी साक्षरता एवं कानूनी जागरूकता पर केंद्रित पुस्तकों का निर्माण करना तथा लोगों को अधिकारों की जानकारी देकर सशक्त बनाना है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि पुस्तक में लैंगिक समानता तथा सशक्तिकरण हेतु विभिन्न प्रकरणों का चयन किया गया जिसमे शिक्षा को रोचक और प्रभावशाली बनाने कहानी तथा लैंगिक समानता व सशक्तिकरण का चित्रण व कहानी संग्रह भी शामिल किये जाने से छात्र-छात्राओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- **श्रीवास्तव गौरी NCERT (2009) जेंडर कंसर्न इन एजुकेशन-** अध्ययन में प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन का उद्देश राष्ट्रीय महिला शिक्षा (RMSA) के अधिकारियों को लैंगिक समानता से परिचित कराना था एवं बालिका शिक्षा में पाठ्य सामग्री में लैंगिक पूर्वाग्रह और रुढ़ियों की पहचान करना है व शिक्षकों में शिक्षण और सीखने में सहगामी दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना ,कक्षा के वातावरण में लैंगिक समानता की प्रक्रिया को समावेशित करना है। शोध निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि ऑडियो विजुअल मीडिया के द्वारा जनसांख्यिकी संकेतन लिंगानुपात में गिरावट हिंसा आदि घटना पर ध्यान केंद्रित किया गया है तथा एक फॉक सांग का निर्माण किया जो लैंगिक समानता तथा सशक्तिकरण सकारात्मक प्रभाव डालता है।
- **नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ एजूकेशन केम्पसए डिपार्टमेंट ऑफ़ विमेंस स्टडीज़, NCERT (2007), कंसर्न एंड स्ट्रेटजी ऑन डिक्लाइनिंग सेक्स रेसियो (फीमेल फेटीसाइड) कार्यशाला-** कार्यशाला में मुख्य रूप से विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया। तीन दिवसीय राष्ट्रीय परामर्श कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें पुस्तक प्रणयन परिषद में दृश्य एवं प्रदर्शन कलाओं की संकल्पना पर ध्यान केंद्रित किया अध्यापकों से यह आशा रखी गई कि स्वयं अपने व्यवसाय कौशल और अध्यापन अनुभव की सहायता

से इन विचारों को और विस्तृत कर सकें। समस्त विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि पुस्तक प्रणयन परिषद ने कार्यशाला के अंतिम चरण में दृश्य व प्रदर्शन कलाओं को अधिक प्रभावशाली बताया।

मॉड्यूल से सम्बन्धित अध्ययन-

- **बुचर क्रिस्टोफर, क्लारा डेविस, मेलिसा हाइटन रूटलेज, (2019)-** डिज़ाइनिंग लर्निंगः फ्रॉम मॉड्यूल आउटलाइन ऑफ़ इफेक्टिव टीचिंग- प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य थ्योरी और प्रैक्टिस को एक दूसरे से सयोजित करते हुए शिक्षण कार्य को सरल व एक दूसरे के अनुरूप बनाना है, डिज़ाइनिंग लर्निंग मॉड्यूल का संस्करण थ्योरी और प्रैक्टिस से सम्बंधित कोर्सों को डिज़ाइन करने और विकसित करने के लिए उच्च शिक्षा में नए लोगों की मदद करने के लिए सुलभ मार्गदर्शन प्रदान करता है। उच्च शिक्षा के संदर्भ में नए विचारों के साथ, यह पुस्तक उच्चतम गुणवत्ता के मॉड्यूल और डिग्री पाठ्यक्रमों को डिजाइन और विकसित करने के अपने प्रयासों में कर्मचारियों का समर्थन करने के लिए वर्तमान शैक्षिक अनुसंधान का उपयोग किया गया। मॉड्यूल का निर्माण मार्गदर्शन देना, योजना से लेकर सामग्री और संसाधन तैयार करने तक, शिक्षा के प्रचार पर ध्यान देने के साथ, पाठ्यक्रम डिजाइन मॉडल और आकार, और सीखने पर उनका प्रभाव, शिक्षण और शिक्षण के बाहरी प्रभावों को ध्यान में रखते हुए किया गया है। मॉड्यूल पाठ्यक्रम छात्रों की वर्चुअल लर्निंग एनवायरनमेंट (वीएलई), संचार उपकरण और सिस्टम की जगह, पाठ्यक्रम के मूल्यांकन और बढ़ाने के लिए सीखने के तरीकों का समर्थन करने के लिए सिखाया पाठ्यक्रम और व्यापक सह-गतिविधियों के सभी पहलुओं को जोड़ने को महत्व दिया गया है। अध्ययन हेतु उच्च माध्यमिक कक्षा 12 के विज्ञान विषय छात्रों को सम्मिलित किया जिसमें उनके विषय से संबधित डिज़ाइनिंग लर्निंग मॉड्यूल द्वारा शिक्षण कार्य गया अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि उच्च गुणवत्ता वाले पाठ्यक्रम को डिजाइन करने के लिए डिजाइनिंग लर्निंग एक व्यापक मार्गदर्शिका है तथा शिक्षण कार्य को सकारात्मक रूप से सकारात्मक प्रोत्साहित किया है।

- **मैडलुंग एंड्रियास (2018) अस्सेस्सिन्ग एन इफेक्टिव अंडरग्रेजुएट मॉड्यूल टीचिंग एप्लाइड बायोइन्फरमेटिक्स टू बायोलॉजी स्टूडेंट-** प्रस्तुत शोध में स्नातक जीव विज्ञान पाठ्यक्रम कौशल विकास, जैसे आँकड़े या कंप्यूटर विज्ञान स्नातक पाठ्यक्रम के प्रशिक्षकों की मदद करने के लिए, जो स्वयं अपनी शिक्षा के हिस्से के रूप में जैव सूचना विज्ञान नहीं सीखते थे स्नातक जीव विज्ञान को पढ़ाने में संकोच करते है।विषय की प्रभावशीलता तथा विषय को सरलता पूर्वक सीखने के उद्देश्य से एक मॉड्यूल विकसित किया गया। मॉड्यूल सार्वजनिक रूप से उपलब्ध कंप्यूटिंग टूल और डेटा का उपयोग करते हुए, सरल-पर्याप्त भाषा द्वारा निर्मित किया गया है। मॉड्यूल के प्रभाव का आकलन करने के लिए विभिन्न उपकरण विकसित और नियोजित किए गए थे। शोध निष्कर्ष से प्राप्त ज्ञात होता है कि मॉड्यूल छात्रों ने अपनी शिक्षा के लिए गतिविधि को मूल्यवान पाया और समूह चर्चा से स्पष्ट होता है कि जीव विज्ञान पाठ्यक्रम के मॉड्यूल शिक्षण स्नातक के छात्रों को सीखने तथा कौशल विकास में सकारात्मक प्रभाव का आकलन किया गया।
- **नॉर्डिन नोरज़ाह, इफांडी ज़कारिया, निक रहिमा निक मोहम्मद, मोहम्मद अमीन एम्बी(2010) पेडगोजिकल यूसबिलिटी ऑफ़ द जोमेटर्स स्केचपैड (GPS) डिजिटल मॉडल इन द मैथमेटिक्स टीचिंग-**प्रस्तुत शोध का उद्देश्य एक डिजिटल मॉड्यूल प्रोटोटाइप की शैक्षणिक उपयोगिता की जांच करना था, जो गणित शिक्षण में एक ज्यामितीय सॉफ्टवेयर, ज्यामितीय स्केचपैड (जीएसपी) को एकीकृत करता है। प्रोटोटाइप को रीज़र और डिक के इंस्ट्रक्शनल डिज़ाइन मॉडल के आधार पर विकसित किया गया था, जिसने द्विघात कार्य के विषय में जीएसपी सॉफ्टवेयर को एकीकृत किया था। डिजिटल मॉड्यूल को (Macromedia Authorware 7.0) के प्लेटफॉर्म के रूप में विकसित किया गया था। शैक्षणिक प्रयोज्य मानदंड में छात्र नियंत्रण, छात्र गतिविधियों, उद्देश्य-उन्मुख, अनुप्रयोग, मूल्य-वर्धित, प्रेरणा, ज्ञान मूल्य, लचीलापन और प्रतिक्रिया शामिल थी। यह एक मात्रात्मक अध्ययन था जिसमें नमूने के रूप में मलेशिया के सेलांगोर में 34 गणित माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक शामिल थे। प्रयुक्त उपकरण शैक्षणिक उपयोगिता

प्रश्नावली था। परिणामों से पता चला कि प्रोटोटाइप डिजिटल मॉड्यूल उल्लिखित शैक्षणिक प्रयोज्य मानदंड की आवश्यकताओं को पूरा करते थे। इसने गणित शिक्षण में जीएसपी के एकीकरण को भी आसान बनाया। यह सुझाव दिया जाता है कि माध्यमिक स्कूल के छात्रों के बीच उच्च आदेश सोच कौशल को बढ़ावा देने के लिए गणित शिक्षण में जीएसपी के अनुप्रयोगों सकारात्मक प्रभाव प्रक्षेपित करता है।

- **बिस्ट जया (2010) गणित विषय के लिए इन्टरनेट पर उपलब्ध संसाधनों का अध्ययन एवं शिक्षकों के लिए मॉड्यूल का निर्माण-** उद्देश्य-इन्टरनेट पर गणितीय संसाधनों से युक्त वेबसाईट को पहचानना। इन्टरनेट पर उपलब्ध गणितीय संसाधनों का विश्लेषण विद्यालयी स्तर, गणित की विभिन्न शाखाओं, तथा उपयोगिता लागत के आधार पर करना। उपलब्ध संसाधनों से गणित शिक्षकों के लिए मॉडयूल का निर्माण करना। मॉड्यूल के प्रति गणित शिक्षकों की राय जानना। इस अध्ययन के उपरान्त यह पाया गया कि सर्च इंजन व खोज शब्दों की सहायता से 363 वेबसाइट्स को प्राप्त किया गया। विभिन्न स्तरों व शाखाओं की लागत के आधार पर प्राप्त हुई इन उपलब्ध संसाधनों के निर्मित मॉड्यूल के प्रति 98.51 प्रतिशत शिक्षकों की रायत सकारात्मक पायी गई।
- **डैनियल लिजा थैंकम, संध्या गुप्ता, राजेश सागर (2013) इफ़ेक्ट ऑफ़ एजुकेशन मॉड्यूल ऑन नॉलेज ऑफ़ प्राइमरी स्कूल टीचर्स रिगार्डिंग अर्ली सिम्पटम्स ऑफ़ चाइल्डहुड साइकियाट्रिक डिसऑर्डर्स-** शोध कार्य का लक्ष्य बचपन के मानसिक विकारों के शुरुआती लक्षणों के बारे में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के ज्ञान पर शैक्षिक मॉड्यूल के प्रभाव का आकलन करना था। न्यादर्श हेतु दिल्ली के चुनिंदा स्कूलों में 35 प्राथमिक स्कूल शिक्षकों के नमूने पर एक प्रायोगिक अध्ययन किया गया था। अध्ययन हेतु सामग्री बचपन के मनोरोग विकारों के शुरुआती लक्षणों (ईएससीडी पर सिम) पर स्व-अनुदेशात्मक मॉड्यूल विकसित किया गया।'डेमोग्राफिक और चयनित चर' और पूर्व-परीक्षण ज्ञान प्रश्नावली के लिए संरचित प्रश्नावली सहित मानकीकृत साधनों का उपयोग करके डेटा एकत्र किया गया । ईएससीडी पर

15 दिनों की अवधि के लिए विषयों को उजागर किया गया था। बचपन के मानसिक विकारों के शुरुआती लक्षणों के बारे में ज्ञान का आकलन दो बार किया गया था, पहला मॉड्यूल के संपर्क में आने से पहले और दूसरा प्रदर्शन के 16 वें दिन। सांख्यिकीय विश्लेषण सांख्यिकीय पैकेज STATA 9.0 संस्करण का उपयोग करके डेटा का विश्लेषण किया गया। निष्कर्ष से ज्ञात होता है सरकारी स्कूलों में पढ़ाने वाले प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के पास निजी क्षेत्र की तुलना में उच्च परीक्षा पूर्व ज्ञान स्कोर था। ईएससीडी पर सिम के प्रशासन से पहले (9.71) और उसके बाद (15.60) प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के औसत ज्ञान स्कोर में महत्वपूर्ण अंतर था। छोटे शिक्षक और जिनके पास शिक्षण का अनुभव कम था, उनके पास अधिक ज्ञान प्राप्त करने वाले स्कोर थे जो पुराने थे और अधिक शिक्षण अनुभव था। बचपन के मानसिक विकारों के शुरुआती लक्षणों पर प्राथमिक स्कूल के शिक्षकों की पर्याप्त पूर्व-सेवा और इन-सर्विस शिक्षा की अनुपस्थिति में, ईएससीडी पर सिम प्राथमिक स्कूल के शिक्षकों के बचपन के मानसिक विकारों के शुरुआती लक्षणों पर ज्ञान में सुधार के लिए एक अत्यधिक प्रभावी और व्यवहार्य तरीका है।

- **श्रीवास्तव सुजाता, प्रतिभा मैत्रा (2016) डेवलपमेंट एंड इम्प्लीमेंटेशन ऑफ़ मॉड्यूल फॉर वैल्यू इन्सुलकशन थ्रू टीचिंग सोशल साइंस-** अध्ययन का उद्देश्य समानता और शांति के मूल्यों की वैचारिक ज्ञान और धारणा के संदर्भ में सामाजिक विज्ञान को पढ़ाने के लिए मॉड्यूल की प्रभावशीलता को विकसित करना, लागू करना और उसका अध्ययन करना था। अनुसंधान डिजाइन प्रयोगात्मक था नमूने का चयन करने के लिए सुविधा नमूना तकनीक का पालन किया गया जिसमें वडोदरा शहर के दो स्कूलों के नौवीं कक्षा के 30 छात्रों को शामिल किया गया, जिससे प्रयोगात्मक और नियंत्रण समूह का गठन किया गया। उपलब्धि परीक्षण, मूल्य ज्ञान परीक्षण, और धारणा पैमाने का निर्माण किया गया था और डेटा इकट्ठा करने के लिए प्रशासित किया गया था। अध्ययन पांच चरणों में आयोजित किया गया था। एसडी, मान-व्हिटनी यू-टेस्ट का उपयोग डेटा विश्लेषण के लिए किया गया था। निष्कर्षों से पता चला कि

सामाजिक विज्ञान के शिक्षण के माध्यम से छात्रों में मूल्यों के विकास के लिए शिक्षकों के लिए विकसित मॉड्यूल प्रभावी था।

- लैंगिक समानता में दृश्य व प्रदर्शन कला सकारात्मक प्रभाव डालती है इसके लिए कुछ विज्ञापन तथा कैंपेन को शोध में सम्मिलित किया गया है जिसमें **HE FOR SHE अभियान (2014**), # **मी टू अभियान (2006),(2017),(2018), महिंद्रा ग्रुप प्रोजेक्ट नन्ही कली # लड़की हाथ से निकल जाएगी अभियान (2019)** ,**लक्ष्मी अग्रवाल स्टॉप सेल एसिड (2005), रुयूनाइटेड बाय हाफ (2017)** यह कुछ ऐसे भी अभियान जिन्हें किसी चित्र, लघु, फिल्म, सॉन्ग, स्लोगन के माध्यम से शुरू किया गया सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हुए और अच्छी प्रभावशीलता को सूचित किया टी.वी. आने वाले विज्ञापन **टाट-टी, हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड, कोलगेट, बीबा कुर्ती आदि के विज्ञापनों** तथा **"बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान" (2015)** द्वारा बनाई गई शॉर्ट फ़िल्म और सांग द्वारा लैंगिक समानता को प्रदर्शित किया गया। उपर्युक्त विवेचन में दृश्य एवं प्रदर्शन कला पर अध्ययन दृष्टिगोचर हुए हैं कला शिक्षण को तथा लैंगिक समानता को सकारात्मक रूप से प्रवेश करती है परंतु उच्च माध्यमिक स्तर पर लैंगिक समानता कला समेकित शिक्षा तथा उससे संबंधित मौजूद के अंतर्गत कोई अध्ययन नहीं किया गया है, शोधार्थी के मस्तिष्क में यह विचारणीय प्रश्न उठते हैं।
- क्या उच्च माध्यमिक स्तर पर कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल का विद्यार्थियों की जागरूकता व सामाजिक मूल्यों के विकास हेतु शिक्षण कार्य को रोचक व सुगमय बनाया जा सकता है?
- क्या कला समेकित मॉड्यूल लैंगिक समानता विद्यार्थियों में लैंगिक समानता के परिपेक्ष्य में लैंगिक अधिकारों, उत्पीड़न संबंधित संवैधानिक जागरूकता लाने में सहायक है?
- क्या कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल लैंगिक समानता के परिपेक्ष्य में लैंगिक समानता से संबधित अधिकार, कर्त्तव्य, न्याय, सामाजिक समानता, व नैतिकता संबंधी सामाजिक मूल्यों को विकसित बनाने में सहायक होगा?

- क्या कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल विद्यार्थियों के मध्य लैंगिक समानता स्थापित करने में सहायक होगा?

इन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रस्तुत शोध अध्ययन को समस्या के रूप में चयनित किया गया है।

1.6.1 शोध अध्ययन के उद्देश्य-

प्रस्तुत शोध मे निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये है

1. कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल का विकास।

2. कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल की प्रभावशीलता का अध्ययन।

3. कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल का विद्यार्थियों की लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता पर प्रभाव का अध्ययन।

4. कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल का विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन।

1.6.2 शोध अध्ययन की परिकल्पना-

H1 कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल से विद्यार्थियों की लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता पर प्रभाव पड़ेगा।

H2 कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल से विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव पड़ेगा।

1.6.3 अध्ययन का परिसीमांकन-

अध्ययन का निम्न प्रकार से परिसीमांकन किया जाएगा-

1. अध्ययन हेतु यूपी बोर्ड की उच्च माध्यमिक स्तर की इंटरमीडिएट कक्षा-11 को ही सम्मिलित किया जाएगा।

2. कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल दृश्य एवं प्रदर्शन कला आधारित होगा।

3. अध्ययन कार्य आगरा शहर में किया जायेगा।

5. अध्ययन लैंगिक समानता से सम्बंधित ज्ञान, अधिकारों और कर्त्तव्यों से सम्बंधित संवैधानिक ज्ञान, सामाजिक समानता व सामाजिक मूल्यों के प्रति सजगता को सम्मिलित किया जाएगा।

1.6.4 अध्ययन के चर-

स्वतंत्र चर- कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल ।

आश्रित चर- जागरूकता व सामाजिक मूल्य।

अध्ययन के लिए स्वतंत्र चर के रूप में कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल तथा आश्रित चर के रूप में उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं पर जागरूकता व सामाजिक मूल्यों के प्रभाव को लिया गया है।

1.6.5 न्यादर्श के चयन के लिए निम्न प्रकार की प्रक्रिया अपनाई जाएगी-

न्यादर्श हेतु सोद्देश्य विधि का प्रयोग विद्यालय के चयनए उच्च माध्यमिक स्तर के चयनए कक्षा के चयन {इंटरमीडिएट कक्षा (11)} किया जाएगा तथा विद्यार्थियों का चयन गुच्छ प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया जाएगा। प्रोगात्मक समूह 30+30(छात्र+छात्राएं), नियंत्रित समूह 30+30 (छात्र+छात्राएं) कुल न्यादर्श (N=120) के रूप में लिये जायेगे।

1.6.6 अध्ययन की विधि- शोध अध्ययन की विधि के रूप में विकासात्मक एवं अर्द्ध प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया जाएगा।

1.6.7 शोध अध्ययन की प्रक्रिया एवं शोध प्रारूप इस प्रकार है-

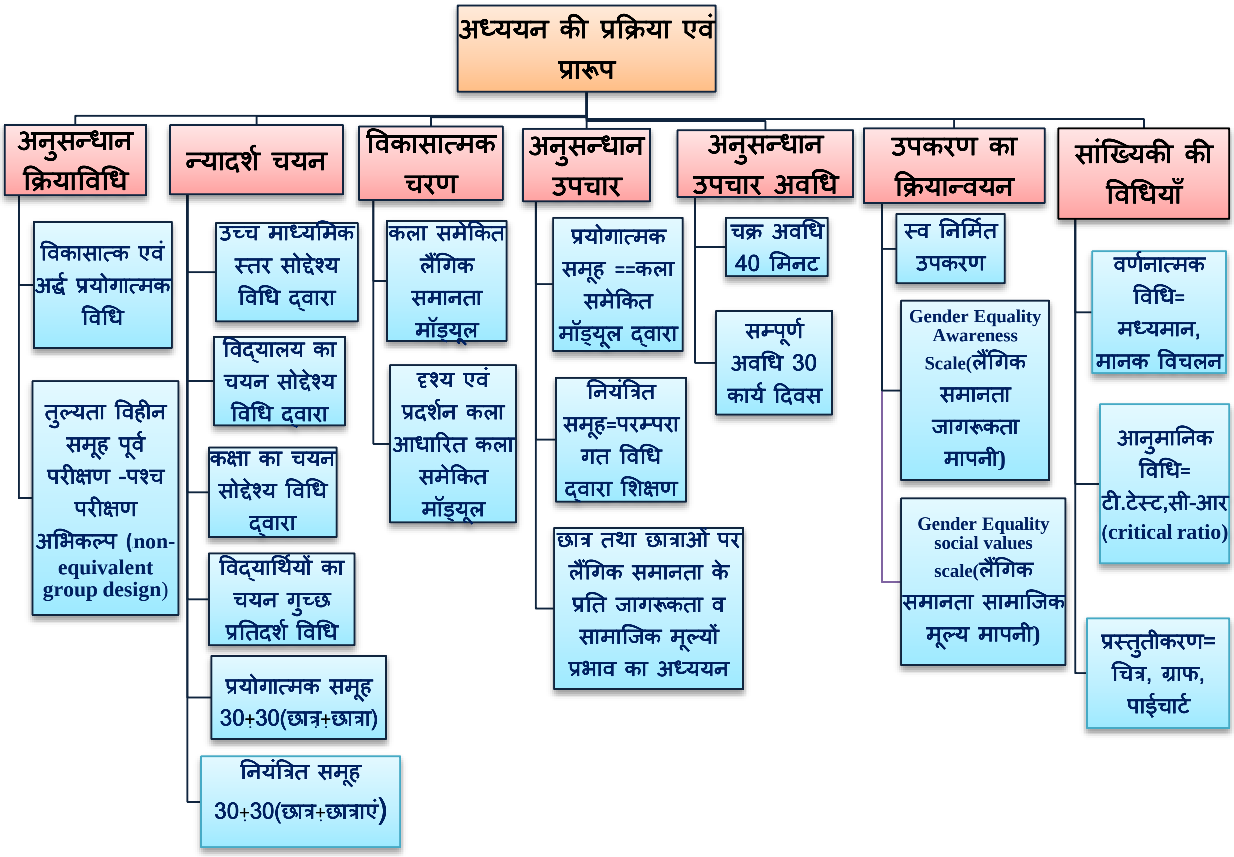

चित्र संख्या 1.6.7

S1.6.8 सांख्यिकी की विधियाँ -

प्रस्तुत शोध के अंतर्गत मध्यमान, मानक विचलन, टी-टेस्ट, सी-आर, सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया जाएगा। प्रस्तुतीकरण चित्र, ग्राफ एवं पाईचार्ट के माध्यम से किया जाएगा।

1.6.9 उपकरण- लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता तथा सामाजिक मूल्यों विषय-वस्तु आधारित उपलब्धि हेतु स्व निर्मित **Gender Equality Awareness Scale** (**लैंगिक समानता जागरूकता मापनी**) व **Gender Equality Social Value Scale (लैंगिक समानता सामाजिक मूल्य मापनी)** का प्रयोग किया जाएगा।

1.6.10 अध्ययन की प्रक्रिया- अध्ययन की विस्तृत प्रक्रिया निम्न प्रकार से हैं।

प्रथम चरण: योजना चरण- योजना चरण के अंतर्गत निम्न गतिविधियों को पूर्ण किया जायेगा।

1. मॉड्यूल की प्रारूप- मॉड्यूल का प्रारूप तीन भागों में विभक्त होगा प्रस्तवना, विषय वस्तु का विकास, उपसंहार तथा मॉड्यूल दृश्य एवं प्रदर्शन कला आधारित होगा।

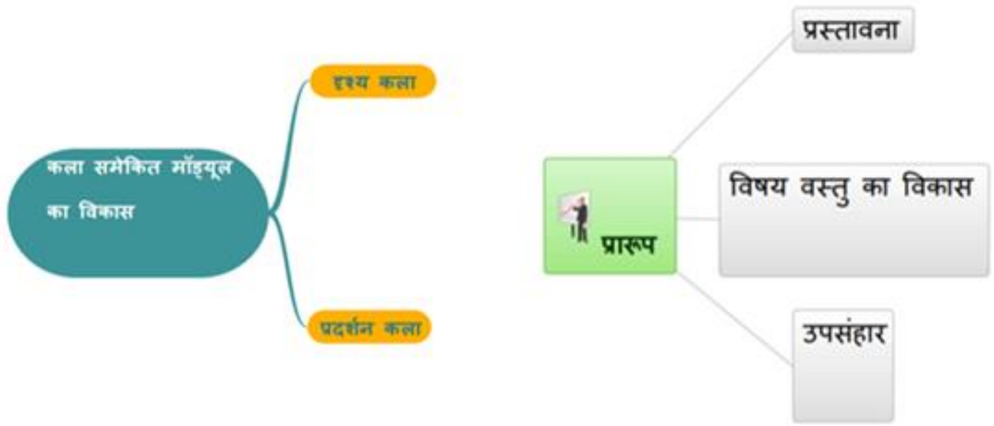

चित्र संख्या: 1 मॉड्यूल का प्रारूप

2. **मॉड्यूल का विकास:** कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल का विकास किया जाएगा जिसके चरण निम्नवतः है-

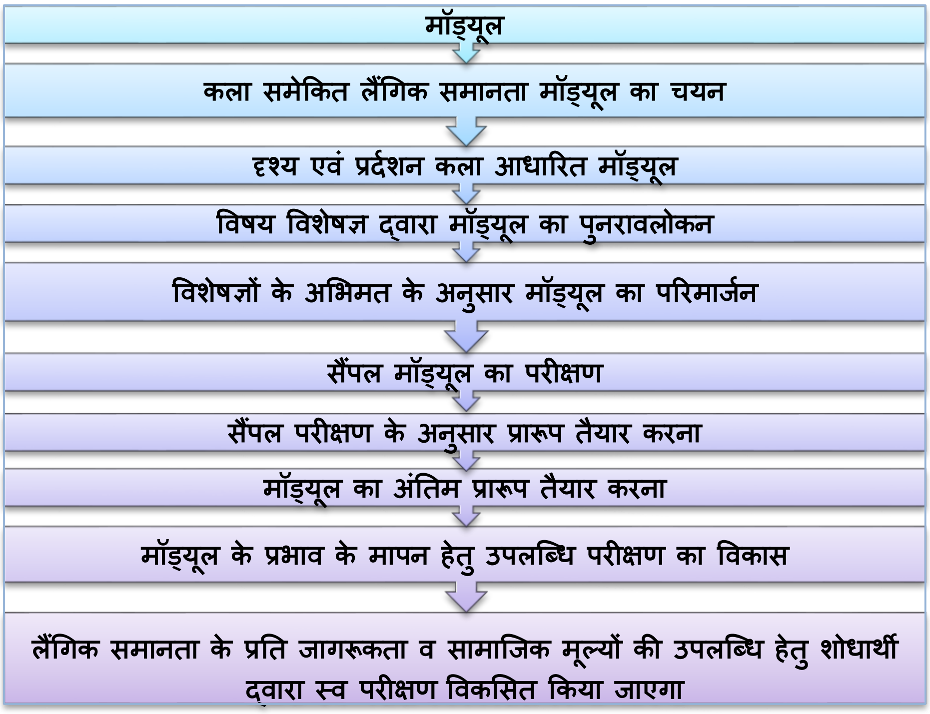

चित्र संख्या: 2 मॉड्यूल का विकास

3. **मॉड्यूल की प्रक्रिया-** दृश्य एवं प्रदर्शन कला आधारित कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल के अंतर्गत विषय वस्तु या प्रकरण से संबंधित आइस ब्रेकर का निर्माण किया जाएगा। इसके पश्चात विषय वस्तु से संबंधित स्लाइड शो, कठपुतली, संगीत, वीडियो फिल्म, ड्रामा, नुक्कड़-नाटक आदि का प्रयोग किया जाएगा। विषय से संबंधित समूह चर्चा या वाद-विवाद प्रश्नों का प्रयोग किया जाएगा। तत्पश्चात विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण एवं मंथन प्रश्नों के माध्यम से अवगत कराया जाएगा तथा ऐसे प्रश्नों को पूछा जाएगा जो विषय से संबंधित हो जिसका समय निर्धारित किया जाएगा। अंतिम प्रक्रिया में संपूर्ण मॉड्यूल से संबंधित (बजर राउंड) “पहले मै” गतिविधि का प्रयोग किया जाएगा।

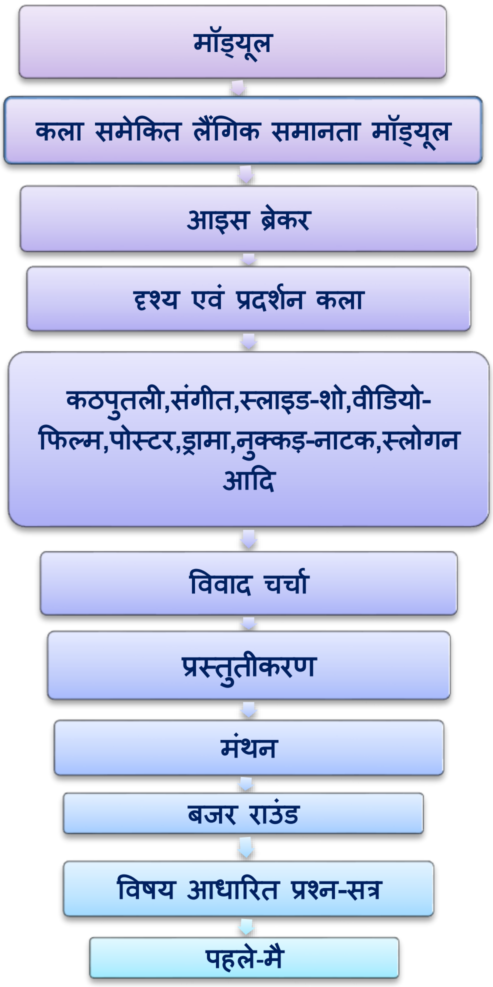

चित्र संख्या: 3 मॉड्यूल की प्रक्रिया

4. **प्रस्तुत शोधकार्य में प्रस्तावित कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल की रुपरेखा:**

प्रस्तुत शोध में प्रस्तावित कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल के निर्माण हेतु विषय वस्तु का चयन किया गया है। जिसमें निम्नलिखित 5 अध्यायों को सम्मिलित किया गया है।

कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल की रुपरेखा	
विषय सूची	
अध्याय	विषय वस्तु में प्रयुक्त कलाएँ
1.समानता का अर्थ.महत्व एवं सतत विकास लक्ष्य • लैंगिक समानता का अर्थ एवं परिभाषा • समानता का महत्व • लैंगिक समानता एवं सतत विकास लक्ष्य	पोस्टर,वीडियो,स्लाइड.शो
2. लैंगिक समानता में यूनिसेफ (UNICEF) का कार्य क्षेत्र • स्वास्थ्य • शिक्षा • सशक्तिकरण • सुरक्षित वातावरण	स्लाइड.शो,वीडियो,संगीत
3. लैंगिक समानता तथा संविधान (01) • संविधान उद्देशिका • राजनैतिक, आर्थिक अधिकार तथा सामाजिक न्याय • मौलिक अधिकार	नुक्कड़ नाटक,वीडियो,थिएटर
4. लैंगिक समानता तथा संविधान (02) • मौलिक कर्त्तव्य • लैंगिक समानता हेतु राज्य तथा कानून की भूमिका • सरकार द्वारा स्वचालित योजनाओं का निर्देशन	स्लोगन,कठपुतली,वीडियो
5. लैंगिक समानता हेतु उपाय • लैंगिक समानता में समाज की भूमिका • लैंगिक समानता हेतु विद्यालय तथा कक्षा.कक्ष क्रियाएँ व सुझाव • लैंगिक असामनता को रोकने हेतु उपाय	पोस्टर,ड्रामा,शार्ट फ़िल्म

चित्र संख्या: 4 कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल की रुपरेखा

द्वितीय चरण: कक्षागत प्रयोग- समस्त प्रारूप की योजना बनाने के पश्चात विकासात्मक व अर्द्ध प्रयोगात्मक विधि के माध्यम से शोध पूर्ण किया जाएगा। शोधार्थी द्वारा सोद्देश्य विधि तथा गुच्छ प्रतिदर्शन विधि से न्यादर्श का चयन करके तुल्यता विहीन समूह पूर्व परीक्षण-पक्ष परीक्षण अभिकल्प (Non Equivalent Group Design) प्रयोग किया जाएगा, परीक्षण अनुसंधान क्रियान्वयन में प्रयोगात्मक समूह पर कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल द्वारा शिक्षण तथा नियंत्रित समूह पर परम्परागत विधि द्वारा शिक्षण कार्य प्रशासित किया जायेगा तदोउपरांत छात्र तथा छात्राओं पर लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता व सामाजिक मूल्यों प्रभाव का अध्ययन स्व निर्मित उपकरण का प्रयोग द्वारा किया जाएगा। अनुसंधान उपचार अवधि में चक्र अवधि 40 मिनट तथा सम्पूर्ण उपचार अवधि 30 कार्य दिवस रखी जाएगी।

अनुसंधान उपचार का क्रियान्वयन

नियंत्रित समूह (N=60)	**पूर्व-परीक्षण लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता तथा सामाजिक मूल्य**	**परम्परागत विधि द्वारा शिक्षण कार्य**	**पक्ष-परीक्षण लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता तथा सामाजिक मूल्य**	**सम्पूर्ण उपचार अवधि:सम्पूर्ण उपचार अवधि: 30कार्य दिवस, चक्रअवधि:40मिनट**	**नियंत्रित और प्रयोगात्मक समूह के आकड़ो की तुलना कर ली जाएगी**
प्रयोगात्मक समूह (N=60)	**पूर्व-परीक्षण लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता तथा सामाजिक मूल्य**	**कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल द्वारा शिक्षण**	**पक्ष-परीक्षण लैंगिकसमानता के प्रति जागरूकता तथा सामाजिक मूल्य**		

चित्र संख्या: 5 अनुसंधान उपचार का क्रियान्वयन

मूल्यांकन चरण- कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए पूर्व व पश्च परीक्षण से प्राप्त परिणामों की उपयुक्त सांख्यिकी विधियों के माध्यम से परस्पर तुलना कर ली जाएगी।

1.7 **शैक्षिक निहितार्थ-** प्रस्तुत शोध अध्ययन उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं पर कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल के विकास व शिक्षण की संदर्भ से संबंधित है। शोध अध्ययन कला समेकित अधिगम के अंतर्गत दृश्य एवं प्रदर्शन कला के माध्यम के रूप मे विद्यार्थियों शिक्षकों की सीखने सिखाने की प्रक्रिया हेतु शैक्षिक निहितार्थ रख सकते हैं।

1.7.0 विद्यार्थियों हेतु-

- कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल द्वारा विद्यार्थियों के सीखने के स्तर में गुणात्मक सुधार होंगे।
- कला समेकित मॉड्यूल द्वार ज्ञानात्मक पक्ष के साथ-साथ भोवनात्मक पक्ष को विकसित किया जाए तो क्रियात्मक पक्ष स्वत् ही विकसित हो जाएगा।
- विद्यार्थियों में लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता व सामाजिक मूल्यों के प्रति सजगता, संगठन तथा स्थायी ज्ञान का विकास करना संभव हो सकता है ।
- छात्र-छात्राओं में लैंगिक समानता के संबंध में समानता न्याय भेदभाव तथा व्यवसायिक एक जागरूकता हेतु स्थायी रूप से संज्ञान स्थापित कर सकते हैं।
- कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल सीखे गए ज्ञान को प्रयोग करने तथा सामाजिकए आर्थिक स्थिति में परिवर्तन लाने में प्रयोग कर सकेंगे। इस प्रकार कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल छात्र-छात्राओं में वांछित व्यवहार विकसित करने में सहायक है तथा उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्र-छात्राओं में लैंगिक समानता के संप्रत्ययों को समझने तथा समानता का भाव उत्पन्न करने के लिए सक्षम हो सकते हैं।
- कला समेकित लैंगिक समानता मॉड्यूल समानता व सामाजिक मूल्यों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने में सहायक है। कला की दृश्य एवं प्रदर्शन कला ऐसे माध्यम है जो प्रत्ययों को सरलता से समझने, रोचकता प्रदान करने तथा नीरसता समाप्त की जा सकती है।

1.7.1 **शिक्षकों एवं आयामों हेतु-**

- कला सीखने सिखाने की प्रक्रिया में प्राकृतिक संबंध तथा सामाजिकता अंतर्निहित हैए जिसमें प्रकृति और समाज के प्रति संवेदनशीलता की भावना विकसित होगी। प्रारंभिक स्तर पर इस बात को समझना आवश्यक है, कला समेकित अधिगम विद्यार्थियों को कला के विभिन्न स्वरूपों से अवगत कराने के साथ-साथ उन्हें ऐसे अवसर प्रदान किए जाएं कि वह रचनात्मक तरीके से स्वयं को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त कर सकेंगे।
- विद्यार्थियों की अंतर्निहित प्रतिभा को पहचानने व निखारने का अवसर मिले इसके लिए कक्षा का वातावरण विभिन्न दृश्य एवं प्रदर्शन कला पूर्ण हो साथ ही शिक्षक भी अपनी शिक्षण प्रक्रिया में कला माध्यम में नवाचार लाने की निरंतर प्रयास करें।
- कला शिक्षण का उद्देश्य सीखने की सहज इच्छा और युक्तियों को समृद्ध करना होता है, मात्र सूचना देना नहीं। ज्ञान को सूचना से अलग होना चाहिए, सक्रिय गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में नर्सिंग विकास के अवसर प्रदान करने चाहिए।
- शिक्षण संस्थाएं और उसकी विधियां व पाठ्यक्रम प्रायः बालकों के नर्सिंग विकास तथा आवश्यक एवं सामान्य न्यायिक जानकारी देने में असफल सिद्ध हो रहे हैं, वर्तमान परिदृश्य में सीखने की परिस्थितियां अधिक जटिल है। इस प्रकार की जटिलता को समाप्त करने के लिए सीखने की परिस्थितियां सरल एवं स्वतंत्र बनानी होंगी कला समेकित अधिगम ज्ञानात्मक विकास के साथ भावनात्मक विकास की संभावना अधिक रहेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

- आर्लेडरए एनेट (2010); करेक्टरस्टिक ऑफ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स, ऐडिटेड वाय द रौटलेज कम्पोनियन टू रिसर्च इन द आर्ट माइकल बिग्स एंड हेनारके कारलसून लंदन एंड न्यूयार्क पृ0सं0345-362
- अग्निहोत्री, प्रशांत (2009);महिला सशक्तिकरण तथ्य और उपाय, प्रौढ शिक्षा वर्ष 52 अंक 8 दिसम्बर।
- बुचर क्रिस्टोफर, क्लारा डेविस, मेलिसा हाइटन रूटलेज,(2019);यडिज़ाइनिंग लर्निंगः फ्रॉम मॉड्यूल आउटलाइन ऑफ़ इफेक्टिव टीचिंग रूटलेज टेलर एंड फ्रांसिस ग्रुप लंदन एंड न्यू यॉर्क फर्स्ट पब्लिश्ड, कॉपीराइट 2006 चिरसटोफेर बुचर, क्लारा देवीएस एंड मेलिसा हिघ्तों ISBN10:0-415-38030-8(pbk)
- बिस्ट जया(2010);गणित विषय के लिए इन्टरनेट पर उपलब्ध संसाधनों का अध्ययन एवं शिक्षकों के लिए मॉड्यूल का निर्माण पी0एच0डी0 रिसर्च डी.एस.कॉलेज अलीगढ़ (शिक्षा संकाय) उ0प्र0।
- ब्योर्कए सोसिलियाए रैपर्ट एन.आर. आर्टमोनिटर (2011);क्लेमिंग स्पेश डिशकरेज ऑन जेंडर पोपूलर म्यूजिकएंड सोशन चेंज ऐकडमी ऑफ म्यूजिक एंड ड्रामा यूनिवर्सिटी ऑफ गोर्टबोर्ग।
- बराल,जी0बी0 (2008);बैंडर फ्रैंडली एपरोच इन करीकुलम ट्रांसकेशन सम इश्यू एंड गाइडलाइन इन अरूणाचल प्रदेश पृ0सं0 82-84
- ब्रुलेटर लाएन (2009);हाउ द आर्ट्स चिल्ड्रन तो क्रीट हैल्थी सोशल स्क्रिप्ट्स :एक्सप्लोरिंग द परसेप्शन एलीमेंट्री टीचर आर्ट्स एजुकेशन पॉलिसी रिव्यु 111(1) ISSN1063-2913,यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया
- सिंह, अरूण कुमार मनोवैज्ञानिक समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, 2015 पृ0सं0 115-120

- संवर्धन (2019) त्रैमासिक पत्रिका, महात्मागांधी अंतराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा अंक 2, पृ0सं0 15-18,30-34
- सतत एवं समग्र मूल्यांकन (C.C.E) प्राथमिक स्तर के लिये प्रतिमान सामग्री मार्च, (2015),NCERT पृ0सं0 1-6
- सी0सी0ई0 उच्च प्राथमिक स्तर पर प्रतिभान सामग्री कला शिक्षा, फरवरी (2017) NCERT पृ0सं0 6-15
- सिंह, कीर्ति (2018); जेंडर सवेदीकरण शिक्षक शिक्षा की भूमिकाए इंटरनेशनल एजूशन जर्नल चेतना Vol.2 ISSN 2231-361,ऑनलाइन 2455-8729 पृ0सं0 72-78
- सिंह, धनबीर (2018) महिला सशक्तिकरण :मुद्दे एवं चुनौतियां-जनपद मेरठ का एक भौगोलिक अध्ययन,रिमार्किंग एन अनलिज़शन VOL.3, ISSUE-4,ISSN-2394-0344 पृ0सं0 182-188
- सिंह, संतोष कुमार (2016);बालिका शिक्षा, कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, विलासपुर, ग्रेटर नोएडा, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इनोवेटिव सोशल साइंस एंड हुमानिटीज़, ISSN 2349-1876,VOL.3,पृ0सं0 32-35
- सक्सेनाए डॉ स्वाति (2015);मानवधिकार एवं सामाजिक सशक्तिकरण के प्रति स्त्रियों की जागरूकतारू एक शैक्षिक अध्ययनए इन्टरनेशल रिसर्च ऑफ मैनेजमेट सोशियोलोजी एंड हुमानिटीज़ ISSN 2277-9809 पृ0सं0 156
- सीमोन, ओचेमें अकपकवू (2014);जेंडर इक्वलिटी इन स्कूलरू इप्लिकेशन फॉर द करिकुलम टीचिंग एंड क्लासरूम इंटरवेंशनए जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड प्रैक्टिसए ISSN 222-288X पृ0सं0 11
- सिंह, अशोक प्रताप (2015);उच्च शिक्षा संस्थाओं में अध्ययनरत छात्राओं की महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्ति का उनके वैयक्तिक एवं परिवारिक पृष्ठ भूमि के संदर्भ में अध्ययन कुमाऊँ यूनिवर्सिटी।
- स्ट्रैंगए गार्लीव केथरीन (2017);क्रिएशन कन्वैक्शनल एक्टिविटी एम्पोवेर्मिंग यंग वूमेन थ्रू डांस रिफार्म, यूनवर्सिटी ऑफ नॉर्थेर्न कालोराडो।

- इकोनोमिकल सोशल काउन्सिल यूनीसेफए जेंडर एक्सन प्लान (2018-21);यूनाइटेड नेशन चिल्ड्रन फंड एक्जीक्यूटिव बोर्ड सेकण्ड रेगूलर सेशन (2017) पृ0सं0 3121-4121
- मैडलुंग एंड्रियास (2018);अस्सेस्सिन्ग एन इफेक्टिव अंडरग्रेजुएट मॉड्यूल टीचिंग एप्लाइड बायोइन्फरमेटिक्स टू बायोलॉजी स्टूडेंट PLOS कम्प्यूटेशनल बायोलॉजी 14 (1),e1005872
- एनालिसिस ऑफ द टेक्स्टबुक ऑफ आसाम, बिहार, छत्तीसगढ, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, ओडिशा, महाराष्ट्र, मणिपुर,एंड राजस्थान एन ओवरऑल रिपोर्ट डिर्पाटमेन्ट ऑफ जेंडर स्टडीज NCERT पृ0सं0 3-9,19-38
- वाटसन ऐमा (2014);जेंडर इक्वालिटी इज़ योर्स इश्यू टू स्पीच, इवेंट “HE FOR SHE” कैम्पैन, यूनाइटेड नेशन हेड क्वार्टर, न्यूयार्क।
- NCF (2005), NCERT, नई दिल्ली पृ0सं0 -5
- कर्टिसए इयानरेव डीजे रिकरे (2005); किरेटिग इंस्प्रिरेशनरू हाओ विजुअल एंड परफॉर्मिग आर्ट्स स्पेश द बिहेवियर ऑफ द इनवायरेंट लैंड एंड वाटर ऑस्ट्रोलिया प्रोजेक्ट लराईक U.N.E 44, यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू इंग्लैण्ड।
- कंट्री रिपोर्ट, आर्ट एजूकेशन इन इण्डिया वाय डिपार्टमेन्ट ऑफ एजूकेशन इन आर्ट एंड मैकग्रेगर (एडिटर) ऑसफोर्ड हिन्दी इग्लिश डिक्शनरी ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली (2012) पृ0सं0 951
- कला शिक्षा पर प्रशिक्षण पैकेज प्राथमिक शिक्षकों के लिए (2018) NCERT अरविंद मार्ग, नई दिल्ली।
- कैथकॉनए लुईस वाइट (2011);किशेडटिंग ए स्पनेश फॉर यंग वीमेनस वॉइस यूजिंग पाटीसिपेटरी वीडियो ड्रामा इन यूगांडा, जेंडर प्लेस एंड कल्चर ए जर्नल ऑफ फेमीनिस्ट जियोग्राफी,18(1)ISSN 0966-369X पृ0सं0 1152,135

- कश्यप, सुभाष हमारा संविधान;भारत का संविधान और संवैधानिक विधि, नौवीं आवृति 2009 नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया,पृ0सं0 43,75-121,125,131-133
- कुमार, शिव फरवरी (2001);कला शिक्षाक्रम एक-प्रस्ताव शिक्षा विमर्श पृ0सं0 18-33
- गांधी, प्रेमचन्द फरवरी (2001);शिक्षा का आधार कला शिक्षा विमर्श पृ0सं0 34-36
- गिवरायी, जूलिया यूल एप्रैम. वुतुजा, क्रिस्टनी (2017);थियेटर टू द ईयर जेंडर वसेड वायलेंस रेडियो ड्रामा इंटरवेंशन इन जिम्बाब्बेए जर्नल ऑफ इमर्जिंग ट्रेंड्स एजुकेशन रिसर्च एंड पॉलिसी स्टडीज VOL.108(1) पृ0सं0 25-30
- गुप्ता, नेहा (2015);महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सशक्तिकरण का योगदान कुमाँऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल ISSN 2321-8819 VOL.3, पृ0सं0 120-126
- चाहिल, मनोज कुमार (2013); विद्यालय में लडकियों का समाजीकरण और लैंगिक समता के अवसर, परिप्रेक्ष्य पृ0सं0 49-60
- चौहान, संदीप (2014);लोक तान्त्रिक व्यवस्था महिला सशक्तिकरण सामाजिक परिप्रेक्ष्य ऐशियान जर्नल ऑफ मल्टीडिस्प्रेलेनरी स्टडीज VOL.2 ISSN-2321-8814 पृ0सं0 116
- जोशी, सिधुजा तुषार (2017);इम्पैक्ट ऑफ एडवरटाइजमेंट ऑन वीमने इम्पावरमेट (इण्डिया) इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजिनीरिंग टैक्नोलोजी साइंस एंड रिसर्च, VOL.4 ISSN 2394-3386 पृ0सं0 498-500
- जोशी, पूनम (2015);महिला सशक्तिकरण में वैधानिक अधिकारों की भूमिका: एक अवलोकन, एज्रा VOL.2, ISSN 2 www.ijCM2015.co, ISSN 2455-5967,पृ0सं0 51.11-51.3
- जेंडर इश्यू इज़ फोकस इन NCF 2005 विद रिफेंस टू सेकण्डरी स्कूल टेक्स्टबुक ऑफ आंध्र प्रदेश रीजनल इंस्टिट्यूट ऑफ एजूकेशन NCERT, मैसूर पृ0सं0 15, 20-26

- जेंडर विद्‌यालय एवं समाज, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्‌यालयए कोटा (राजस्थान) पृ0सं0 2-4,15-18
- जेंडर एनालिसिस ऑफ प्राइमरी टेक्स्टबुक ऑफ NCERT (2013.2014);डिर्पाटमेन्ट ऑफ वीमेन्स स्टडीज रिपोर्ट मई दिल्ली पृ0सं0 11-14, 18
- जेंडर निर्देशिका (2017); न्यू एजूकेशन गुरप फांउडेशन फॉर इनोवेशन एंड रिसर्च इन एजूकेशन (N.E.G.FIRE),नई दिल्ली पृ0सं0 4-7, 17, 20
- झा, प्रीती, नीति नागर (2015);ए स्टडी ऑफ जेंडर इनइवक्विटी इन इण्डियाए द इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी ISSN 2348-5386 पृ0सं0 47-51
- ट्रेनिंग मटेरियल फॉर टीचर एजूकेशन जेंडर इक्वलिटी एंड इंम्पावरमेंट पर्सपेक्टिव ऑन जेंडर एंड सोसाइटी NCERT VOL.II जुलाई (2013) VOL.I पृ0 सं0 3-9, 10-33, 42-63, 64-65
- ट्रेनिंग मटेरियल फॉर टीचर एतूकेशन जैडर इक्वालिटी एंड इम्पावरमेंट पर्सपेकिटव ऑन जेंडर एंड सोसाइटी NCERT VOL.II अगस्त (2013) पृ0सं0 3-20, 28-38
- ट्रेनिंग मटेरियल फॉर टीचर एजूकेशन जैंडर इक्वालिटी एंड इम्पाइमेंट पर्सपेक्टिव ऑन जेंडर एंड सोसाइटी NCERT VOL.III सितम्बर (2013) पृ0सं0 3-14, 50-67, 78-98
- डैनियल लिजा थैंकम, संध्या गुप्ता, राजेश सागर (2013);इफ़ेक्ट ऑफ़ एजुकेशन मॉडल ऑन नॉलेज ऑफ़ प्राइमरी स्कूल टीचर्स रिगार्डिंग अर्ली सिम्पटम्स ऑफ़ चाइल्डहुड साइकियाट्रिक डिसऑर्डर्स इंडियन जर्नल ऑफ़ साइकोलॉजिकल मेडिसिन 35 (4), 368-372, 2013
- डंटे ऑन व्यू (2016);द रिसेप्शन ऑफ डाटे इन विजुअल एंड परफॉर्मिग आर्ट्स, लूसिया काले विश्कबेक कॉलेज, यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन, यू0के0
- डिप्लोमा इन एलिमेन्ट्री एजूकेशन कला शिक्षा -2 (SCERT), पटना (बिहार) पृ0सं0 1-13

- गर्ग, अश्वनी कुमार कला समेकिल शिक्षणरू आनंददायी शिक्षण क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान श्यामला हिलस, भोपाल।
- गुप्ता, एस0पी0 एवं डॉ0 अलका गुप्ता, भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास व समस्याएं, शारदा पुस्तक भवन: इलाहाबाद 2012 पृ0सं0 41-42
- नॉर्डिन नोरज़ाह, इफांडी ज़कारिया, निक रहिमा निक मोहम्मद, मोहम्मद अमीन एम्बी (2010);पेडगोजिकल यूसबिलिटी ऑफ़ द जोमेटर्स स्केचपैड (GPS) डिजिटल मॉडल इन द मैथमेटिक्स टीचिंग तुर्की ऑनलाइन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी-TOJET 9 (4), 113-117,
- नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क (NCF) 2005, NCERT, नई दिल्ली पृ0सं0 13,27-30
- नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ एजूकेशन केम्पस, NCERT(2007), कंसर्न एंड स्ट्रेटजी ऑन डिक्लाइनिंग सेक्स रेसियो (फीमेल फेटीसाइड) कार्यशाला।
- नेशनल कॉउंसिल ऑफ एजूकेशन रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग NCERT (2013-2016) द टैक्स्टबुक एनालिसिस प्रोजक्ट फार्म जेंडर पर्सपेक्टिव ऐम टू एक्साइमिंग स्कूल टैक्सटबुक इन ऑल सबजेक्ट एरिया फार्म विज़ुअल आर्ट्स ।
- नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क (NCF) 2005, NCERT, नई दिल्ली पृ0सं0 13,27-30
- नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ एजूकेशन केम्पस NCERT (2007), कंसर्न एंड स्ट्रेटजी ऑन डिक्लाइनिंग सेक्स रेसियो (फीमेल फेटीसाइड) कार्यशाला।
- नेशनल कॉउंसिल ऑफ एजूकेशन रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग NCERT (2013-2016) द टैक्स्टबुक एनालिसिस प्रोजक्ट फार्म जेंडर पर्सपेक्टिव ऐम टू एक्साइमिंग स्कूल टैक्सटबुक इन ऑल सबजेक्ट एरिया फार्म विज़ुअल आर्ट्स।

- देशमुख, नीलिमा, रमेश प्रसाद द्विवेदी (2012);भारत में महिला अपराध एवं उनके संरक्षण हेतु विविध प्रावधान रियर्च रिव्यू इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिशप्लेनरी VOL.2, ISSN 2249-894 X पृ0सं0 8-9
- पोजीशन पेपर 1.7, नेशनल फोकस गुरप ऑन आर्ट, म्यूजिक, डांस एंड थियेटर, मार्च (2006) NCERT, नई दिल्ली पृ0सं0 4
- प्राथमिक शिक्षक शैक्षिक संवाद की पत्रिका (2018) NCERT नई दिल्ली, पृ0सं0 86-39
- प्राथमिक शिक्षण शैक्षिक सांद की पत्रिका (2017), NCERT पृ0सं0 24, 60-63
- पोजीशन पेपर नेशनल फोकस गुरप 1.7 (2008) NCERT पृ0सं0 4,7
- पाठ्यक्रम में लैंगिक मुद्दे लिंग एवं शिक्षा ईकाई पाठ्यक्रम बी0एड0 ब्लाक-2 विक्टोरिया कॉलेज ऑफ एजूकेशन भोपाल (म0प्र0)।
- पोजीसन पेपर 3.2 (2006), नेशनल फोकस गुरप ऑन जेंडर इश्यू इन एजूकेशन NCERT पृ0सं0 5
- प्राथमिक शिक्षक शैक्षिक संवाद की पत्रिका जनवरी (2010)NCERT पृ0सं0 8-24, 37-50
- फ्रीडमन एकैरी (2014);इंटरप्रेटिंग जेंडर एंड विज़ुअल कल्चर इन आर्ट क्लासरूम, स्टडीज इन आर्ट एजुकेशन VOL.35 N3Spring 1994 पबिलश बाय नेशनल आर्ट एजूकेशन एसोसिएशन पृ0सं0 157-170
- भारतीय आधुनिक शिक्षा (2011) NCERT त्रैमासिक पत्रिकाए नई दिल्ली पृ0सं0 32-45
- भारतीय आधुनिकशिक्षा (2016) NCERT त्रैमासिक पत्रिका एनई दिल्ली पृ.सं0 33-40
- भसीनं, अनीश;मानवाधिकार एवं शिक्षा (लेख) महेन्द्र जैन (संपा) प्रतियोगिता दर्पण, अप्रैल 2014 वर्ष (36) अंक (9) पृ स 84
- महिला अध्ययन (2007) NCERT सामाचार प्रकाशित गीता ऑफसेट प्रिंटर्स, श्री अवरिंद मार्ग नई दिल्ली 110016 पृ0सं0 5-7

- महिलाओं के कानूनी अधिकार, भारत सरकार, अल्पसंरक्षक कार्यो का मंत्रालय राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान सीरी इस्टीट्यूशन एरियाए हौज रवास, नई दिल्ली 110016 पृ0सं0 1-30
- महिला एवं बाल विकास (2014), मानव संसाधन मंत्रालय भारत सरकार।
- महिलाओं के विधिक अधिकर एवं कल्याणकारी योजनायें, राज्य महिला आयोग इंदरा भवन लखनऊ(उ0प्र0) पृ0सं0 24
- मंगल, एस. के. ए, शुभ्रा मंगलय व्यावहासिक विज्ञान में अनुसंधान विधियाँ पी.एच.आई. लनिंग प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली, 2019 पृ0सं0 89-98 1345-147
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), MHRD भारत सरकार पृ0सं0 13-15,17-18 ,24, 31-32, 41, 54,59
- रावत, सुभाष मई-सितम्बर (2015);कला एक विषय एक माध्यम प्रवाह पत्रिका पृ0सं0 53-54
- रोड मेप फॉर आर्ट एजूकेशन NCERT 2015 पृ0सं0 4
- रिचर्डसन, सुण्क्लेन बारबरा अन्य (2014);जेंडर इक्विटी इन विजुअल आर्ट एंड डास एजूकेशनए हैण्ड बुक फॉर अचविंग जेंडर इक्विटी थ्रू एजूशन (सेकंड एडीशन)C,1925 ISBXI 978-0-8058-543-4 कापीराइट © (2007) लॉरेंस रबॉम एसोसिएशन. इन पृ0सं0 359-380
- राय, अवधेश नारायण (2019); सामाजिक मुद्दों के प्रति महिला जागरूकता एवं लोक सांस्कृति में प्रति परिवर्तनशील प्रवृत्तियों का समाजशात्रीय अध्ययन,एस०एस० स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाज़ीपुर(उत्तर प्रदेश), रिसर्च डिरेक्शंस, VOL.6, ISSUE-10, ISSN 2321-5488, पृ0सं0 91-98
- राय, सरोज (2016);वर्तमान शिक्षा में महिलओं के संवैधानिक अधिकारों की आवश्यकता सहायक आचार्या शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान,लाड़नू,राजस्थान, मंथली मल्टीडिसप्लीनरी रिसर्च जर्नल रिव्यु ऑफ़ रिसर्च VOL.5, ISSUE-5, ISSN NO. 2249-894X पृ0सं0 1-4
- वार्षिक रिपोर्ट (2015-16) स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग उच्चतर शिक्षा विकास विभागए मानव संसाधान विकास मंत्रालय (MHRD) पृ0सं0 17-23

- वार्षिक रिपोर्ट (2015-16) NCERT अंक (2017) श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली पृ0सं0 13-15
- विधि एवं न्याय मंत्रालय भारत सरकार एवं संयुक्त राष्ट्र कार्यक्रम (2013), एक्सेस टू जस्टिस परियोजना, भारत सरकार, UNDP राज्य संसाधन केन्द्र भोपाल (म0प्र0) पृ0सं0 14-18, 25
- विजन आई.ए.एस. सामाजिक मुद्दे जून (2016) फरवरी (2017) पृ0सं0 7, 12, 21, 33
- वार्षिक प्रतिवेदन (2011-12) राष्ट्रीय बाल भवन कोटला रोड, नई दिल्ली 11002 पृ0सं0 17,19,63
- वर्ल्ड इकोनिक्स फॉरम, ग्लोबल जेंडर गेप रिपोर्ट (2020) पृ0सं0 125, 143, 185, 277, 319
- शिक्षक संदर्शिका कला द्वारा बच्चों की सृजनात्मकता का विकास नवम्बर (2010), राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (SCERT) वरूण मार्ग एडिफेंस कॉलोनी नई दिल्ली पृ0सं0 8-13, 25-33
- शीलता,दास (2013);फोक थिएटर इट्स रेलेवंस इन डेवेलपमेंट कम्युनिकेशन इन इंडिया ग्लोबल मीडिया जर्नल VOL.4 ISSN 2249-5813
- हैंड बुक, प्रमोटिंग जेंडर इक्वलिटी यू द आर्ट एंड किरेयटिव इंडस्ट्रीज रिव्यू ऑफ केस स्टडीज एण्ड ऐवडिंस चैप्टर-1 पृ0सं0 8-13
- श्रीवास्तव सुजाता, प्रतिभा मैत्रा (2016);डेवलपमेंट एंड इम्प्लीमेंटेशन ऑफ़ मॉडल फॉर वैल्यू इन्सुलकशन थ्रू टीचिंग सोशल साइंस एमईआर जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज ट्रेंड्स एंड प्रैक्टिसेस, 178-192,
- श्रीवास्तवए गौरी (2009); जेंडर कंसर्न इन एजूकेशन हेड डिपार्टमेन्ट ऑफ जेंडर स्टडीज NCERT, राष्ट्रीय महिला शिक्षा अभियान (RMSA) मॉड्यूल ।

त्रिवेदी, उमादत्त, डॉ0 मनीष भटनागर (2019);लैगिक समानता एवं कन्या भ्रूण हत्या का अर्थ तथा कन्या भ्रूण हत्या को राकने के लिये सरकार द्वारा बनाए गए कानूनों का अध्ययन रियर्च रिव्यू इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिशिप्लेनरी VOL.4, ISSN 2433-3085 पृ0सं01045

- www.ncert.nic.in
- www.wkipedia.org
- www.edu.gov.on.co/eng/curriculum/elementury/arts
- www.artineducations
- http://sg.inflibnet,ac.in
- http://research.artintegration
- http://research.art.education.unit 2
- http:// research.b.ed.ictbiu.2pdf
- http://research/b.ed kcb3u. pdf
- www.scholar.com
- www.wcd.nic.in
- http://www.un.org/en/tags/gender-equlity
- www.aajtak.intoday.in/education/stong/8-core-plus-children-out-of-school-in-india-right-to-education-census-data-2011-88925.html.
- www.unido.org/our-focus-cross-cutting-services/gender-equlity-and-empowerment-women
- www.unwomen.org/en/news/stories/2020/1/compilation-new-years-resolutions
- http://m-timesofindia-com.cdn.ampproject.org/v/s/m.timesofindia.com/topic/womens-empowerment
- www.indiatoday-in.cdn.ampproject.org/why-india-need-to-achieve-the-un-sustaiable-goal-on-gender-equlity-1668130-2020-40-17
- www.indiatoday.in/magazine/covere-story/story/19760115-india-women-yesterday-today-and-tomorrow-819610-2015-04-28
- www.un.org/sustainabledevelopment/gender-equlity/26-sep-2020www.thediplomat.com/2020/04/indias-covid-19-gender-blind-spot/
- http://www.dristias.com/daily-updates/daily-news-analysis/world-children-s-day
- https://www.thehindu-com.cdn.ampproject.org
- http://hdr.undp.org/en/content/gender-inequality-index-gii